तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

मार्च-2025

रु.20/-

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 10
March - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल श्री बालाजी का उगादि आस्थान

दि.30-03-2025

दि. 04-02-2025 को तिरुमल में रथसप्तमी के अवसर पर भगवान जी ने सप्तवाहनों पर आरूढ़ होकर चार माडावीथियों में भक्तों को दर्शन दिया था।

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज में महाकुम्भमेला के अवसर पर ति.ति.दे. के द्वारा श्री बालाजी का नमूना मंदिर को बनवाया था। इस संदर्भ में ति.ति.दे. ने कुछ धार्मिक, वैदिक कार्यक्रमों को आयोजित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष और उनकी धर्मपत्नी के साथ-साथ ति.ति.दे. के अन्य उच्च अधिकारीगण भी भाग लिया।

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२४)

क्योंकि यह आत्मा अच्छेद्य है, यह आत्मा अदाह्य, अक्लेद्य और निःसन्देह अशोष्य है। तथा यह आत्मा नित्य, सर्वव्यापी, अचल, स्थिर रहनेवाला और सनातन है।

निन्नू नन्नू नेंचुकुनि नेरमि गाक
पन्निन सूर्युनि कांति प्रति सूर्युडौना ॥निन्नू॥

जलधि लोपल मीनु जलधि तानौना
जलमुलाधारमैन जंतुवु गाक
नेलवै नीलोनिवाड नीवे नेनौदुना
पोलसि नीयादरुवु बोम्मनिंतेगाक ॥निन्नू॥

राजुवद्दनुन्न बंटु राजे तानौना
राजसपु चरवरि रचनेगाक
साजमै निन्नु गोलिचि सरिगद्दे नुंदुना
वोज तो निन्नु सेविंचिवुंदु निंतेगाक ॥निन्नू॥

मुत्तेपु चिप्पल नीरु मुन्निटिवले नुंडुना
मुत्तेमुलै बलिसि लो मोनपुगाक
नित्तेपु श्रीवेंकटेश नी शरणागतुलमु
मोत्तपु लोकुलनू मुक्तुलमु गामु ॥निन्नू॥

भक्त तथा भगवान की भिन्नता का विवेचन किया गया है।

हे वेंकटेश! हम दोनों का 'एक रूप' समझना अपराध है। सूर्य की कांति को सूर्य की संज्ञा दे सकते हैं क्या? जलधि में जीवित मछली स्वयं जलधि नहीं बन सकती है। वह जलधि पर आधारित जीव-मात्र है। परमात्मा से रचित प्राणी, परमात्मा कैसे बन सकता है? महाराजा का सेवक, कभी स्वयं महाराजा नहीं बन सकता है। वह मात्र एक सेवक है। सीप में स्थित पानी, फिर से सदा पानी नहीं हो सकता है। मगर वह बूँद, मोती का रूप धारण अवश्य कर लेती है। इसी तरह जीव भी भगवान के संपर्क में आकर शरणागत हो सकते हैं, लेकिन स्वयं भगवान नहीं हो सकते हैं।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,000/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१000/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण,
M.A., M.Phil., Ph.D.,
P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

वर्ष-55 मार्च-2025 अंक-10

विषयसूची

श्री लक्ष्मीजयंती	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा	11
होली त्यौहार की पवित्रता और विशेषता	डॉ.पी.बालाजी	16
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	18
आम्र के पल्लव-कोयल की कुहुक नववर्ष 'उगादि' के सूचक	डॉ.सुमनलता	22
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
तिरुमलेश के सन्निधि में 'उगादि' पर्व	श्रीमती सी.मंजुला	27
मत्स्य अवतार का वैभव	डॉ.रमेश कृष्णा	31
चंद्रमती	डॉ.के.एम.भवानी	34
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	36
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	39
तिरुमल तिरुपति देवस्थान में महिला शक्ति का वैभव	श्रीमती ए.आर.सुधा	42
अमरूद	डॉ.सुमा जोषि	45
मार्च महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - मछुआरे की सीख	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - श्री वेंकटेश्वर का प्रिय भक्त अन्नमय्या	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 32		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री पद्मावती देवी, तिरुचानूर।

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

श्री महालक्ष्मी अवतार का फाल्गुन माह : एक आध्यात्मिक उजास

भारतीय कैलेंडर के अनुसार, फाल्गुन महीना साल का अंतिम महीना माना जाता है। ज्ञान की दृष्टि से देखें तो यह महीना शिशिर ऋतु के अंत और वसंत की नई शुरुआत का संकेत देता है। पेड़ों से पत्तों का झड़ना और नव अंकुरों की झलक, आने वाले नए वर्ष के वसंत आगमन की सूचना देती है।

इस पावन माह में अनेक अनुष्ठान, पूजाएँ और व्रत करने की परंपरा भी प्रचलित है। मत्स्यपुराण में उल्लेख है कि यदि इस महीने में गृह निर्माण जैसे कार्य आरंभ किए जाएं तो संतान प्राप्ति और समृद्धि के साथ-साथ सुवर्ण लाभ भी मिलते हैं। यह महीना भारतीय वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण के मिलन का प्रतीक है।

विशेषकर, 'उत्तर फाल्गुनी' नक्षत्र में उभरती पूर्णिमा की रात्रि की शोभा अतुलनीय है, जिस कारण इस माह को 'फाल्गुनी मास' भी कहा जाता है। इसी दिन 'श्री महालक्ष्मी का अवतार' भी माना जाता है। इस दिन देवी लक्ष्मी की विशेष पूजा की जाती है, जिसमें 'कनकधारा स्तोत्र' का पाठ किया जाता है ताकि माँ के करुणामय स्वरूप की कृपा प्राप्त हो सके। साथ ही, इसी पूर्णिमा पर राक्षसी आघात को दूर करने हेतु 'होलिका पूर्णिमा' का आयोजन होता है, जो आज 'होली' के रूप में विश्वविख्याति प्राप्त कर ली है।

इसके अतिरिक्त, इस मास में श्रीहरि नंदकांश से उत्पन्न हुए 'अन्नमय्या का वर्धन्ती' समारोह भी मनाया जाता है - जिसने श्री वेंकटेश्वर को 32,000 संकीर्तन (तेलुगु भाषा में) अर्पित किए थे और द्वादशी के दिन फिर नंदक के रूप में स्वामी में मिल गया है।

तिरुमल में हर वर्ष पांच दिवसीय 'प्लवोत्सव(तेप्पोत्सव)' का आयोजन किया जाता है। पहले दो दिनों में त्रेता और द्वापरयुग के श्रीराम-श्रीकृष्ण के स्वरूप में श्री वेंकटेश्वर के दर्शन होते हैं, जबकि शेष तीन दिनों में कलियुग के श्रीनिवास, अपनी मनमोहक छवि में भक्तों को अनुग्रह प्रदान करते हैं। इसी क्रम में, तिरुमल के पवित्र पुण्य क्षेत्र में 'कुमारधारा तीर्थ मुक्कोटी' का आयोजन भी बड़े उत्साह के साथ किया जाता है।

महीने के अंत में, फाल्गुन अमावास्या के पश्चात्, श्री वेंकटेश्वर के सान्निध्य में चैत्र शुद्ध प्रतिपदा के दिन तेलुगु जनसमुदाय द्वारा 'श्री विश्वावसु नाम' पर्व और नव वर्ष 'उगादी' का भव्य आयोजन होता है। हमारी यही प्रार्थना है कि श्री वेंकटेश्वर के आशीर्वाद से सम्पूर्ण मानव जाती स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशहाली की ओर अग्रसर हो।

इस प्रकार, फाल्गुन महीना न केवल प्रकृति के परिवर्तन का प्रतीक है, बल्कि यह आध्यात्मिक पुनर्जागरण और दिव्य आशीर्वाद का भी संदेश देता है, जो हम सबको एक उज्वल भविष्य की ओर प्रेरित करता है।

श्री लक्ष्मीजयंती

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

देवी लक्ष्मी हिन्दू धर्म के तीन मुख्य देवियों में से एक हैं। वे लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती हैं। देवी लक्ष्मी धन और समृद्धि की देवी है। वह भगवान विष्णु की पत्नी और महर्षि भृगु की पुत्री है।

लक्ष्मी जयंती, देवी लक्ष्मी के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह फाल्गुन मास में पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। जिसे फाल्गुन पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन समुद्र मंथन से माँ लक्ष्मी प्रकट हुई थी। इस शुभ अवसर पर भक्त पूरी श्रद्धा के साथ धन और समृद्ध की देवी माँ लक्ष्मी की पूजा करते हैं।

इस त्योहार को 'मदन पूर्णिमा' या 'वसंत पूर्णिमा' के रूप में भी मनाया जाता है। कुछ क्षेत्रों में लोग लक्ष्मी जयंती को उत्तर फल्गुनी नक्षत्र के रूप में मनाते हैं। लक्ष्मी जयंती को मुख्य रूप से दक्षिण भारत में मनाई जाती है।

लक्ष्मी जयंती का महत्व :

लक्ष्मी जयंती के दिन भक्त देवी लक्ष्मी को भक्ति के साथ पूजा करके उनकी कृपा प्राप्त करते हैं। इस दिन लक्ष्मी पूजा को बहुत शक्तिशाली माना जाता है। देवी लक्ष्मी आर्थिक संकट से मुक्ति दिलाती है और भक्तों की सभी मनोकामनाओं को पूरी करती है।

हिन्दू धर्म में फाल्गुन की पूर्णिमा का बहुत महत्व है। इस दिन बहुत से त्योहार एक साथ होते हैं। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन ही होलिका दहन का त्योहार मनाया जाता है।

पौराणिक कथा के अनुसार फाल्गुन पूर्णिमा के दिन ही समुद्र मंथन हुआ था और समुद्र मंथन के दिन माँ लक्ष्मी की जयंती मनाई जाती है। इस दिन पूरे विधि-विधान के साथ माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। इस दिन पूजा, हवन करने से माँ प्रसन्न होती है और अपने भक्तों को सुख वैभव का आशीर्वाद देती है। इस दिन का व्रत रखने से माँ लक्ष्मी की कृपा सदा बनी रहती है।

हिन्दू पंचांग के अनुसार हर साल फाल्गुन महीने की पूर्णिमा तिथि के

दिन लक्ष्मी जयंती मनाई जाती है। इस साल लक्ष्मी जयंती का पर्व 14 मार्च को मनाया जाएगा।

श्री महालक्ष्मी :

श्री महालक्ष्मी धन, समृद्धि और सौभाग्य की देवी हैं। वे प्रेम और सौंदर्य की प्रतिमूर्ति है। वे भगवान विष्णु की पत्नी है। वे क्षीरसागर नाम से प्रसिद्ध महान-मंथन के दौरान समुद्र से निकली थीं। श्री लक्ष्मी ने ही भगवान विष्णु को अपने पति के रूप में चुना था। महालक्ष्मी को 'श्री' के नाम से भी जाना जाता है।

लक्ष्मी प्रतिमा :

श्री लक्ष्मी को कमल के फूल पर बैठे या खडे हुए चार हाथों से दर्शाया गया है। वे अपने दो ऊपरी हाथों में कमल के फूल रखती हैं। निचले हाथों में से एक वरद मुद्रा में है जिसके माध्यम से वे धन और समृद्धि प्रदान करती है। दूसरा निचला हाथ अभय मुद्रा में दिखाया गया है। जिसके माध्यम से वे अपने भक्तों को साहस और शक्ति प्रदान करती है।

उन्हें लाल कपडे और सोने के आभूषणों से सुसज्जित दिखाया गया है। उनके चेहरे पर शांत और सोने के आभूषणों से सुसज्जित दिखाया गया है। उनके चेहरे पर शांत और सुखदायक भाव है। उन्हें एक सुन्दर बगीचे में या नीले-समुद्र में बैठे हुए दिखाया गया हैं। वे दो या चार सफेद हाथियों से घिरी हुई है जो जल से उनका अभिषेक कर रहे हैं। उनके वाहन या सवारी सफेद हाथी और उल्लू है।

लक्ष्मी प्रतीक :

देवी लक्ष्मी प्रतीकों की सूची में कमल का फूल, हाथी, श्री, सोना, उल्लू, कौडी आदि जैसे प्रतीक शामिल है। देवी लक्ष्मी के इन प्रतीकों का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है। हिन्दू धर्म में, प्रत्येक देवता को कुछ शुभ प्रतीक समर्पित किए जाते है।

लक्ष्मी के अवतार और स्वरूप :

1) आदि लक्ष्मी - आदि देवी,
2) धन लक्ष्मी - धन की वर्षा करनेवाली,
3) धान्य लक्ष्मी - अच्छी फसल और अन्न की देवी,
4) गज लक्ष्मी - शक्ति और ताकत देनेवाली,
5) संतान लक्ष्मी - संतान को आशीर्वाद देनेवाली,
6) वीर लक्ष्मी - वीरता और साहस देनेवाली,
7) विजय लक्ष्मी - सभी प्रकार के शत्रुओं पर विजय दिलानेवाली,
8) ऐश्वर्य लक्ष्मी - सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ देनेवाली,

महालक्ष्मी के उपरोक्त 8 स्वरूपों को सामूहिक रूप से अष्ट लक्ष्मी के नाम से जाना जाता है। इन आठ रूपों के अलावा, देवी लक्ष्मी की पूजा निम्न लिखित स्वरूपों में भी की जाती है।

विद्या लक्ष्मी - बुद्धि और ज्ञान देनेवाली,
सौभाग्य लक्ष्मी - सौभाग्य का आशीर्वाद देनेवाली।

माँ लक्ष्मी के जन्म से जुडी पौराणिक कथा :

माँ लक्ष्मी से जन्म से जुडी पौराणिक कथा के अनुसार बताया जाता है कि, एक बार राक्षसों ने स्वर्ग को लेकर अपना अधिकार जमा लिया। तब हैरान-परेशान सभी देवता भगवान विष्णु के पास गए और भगवान विष्णु से सभी देवताओं ने समुद्र मंथन करने का अनुरोध किया। हालांकि इसके लिए उन्हें राक्षसों की भी आवश्यकता पड़ती। तब नारदजी राक्षसों के पास गए और उन्हें अमृत का लालच देकर समुद्र मंथन के लिए राजी कर लिया। यह समुद्र मंथन एक कछुए की पीठ और वासुकि नाग के द्वारा किया जा रहा था। जब समुद्र मंथन शुरू हुआ तो एक-एक करके इस मंथन से चौदह रत्न निकले। इन्हीं चौदह रत्नों में से एक थी 'माँ लक्ष्मी'।

माँ लक्ष्मी के हाथ में कलश था और दूसरा हाथ वर मुद्रा में था। समुद्र मंथन से उत्पन्न होने के बाद माँ लक्ष्मी ने पति के रूप में भगवान विष्णु का वरण कर लिया। बताया जाता है कि, जिस दिन समुद्र मंथन से माँ लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी यह दिन फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा का दिन था और यही वजह है कि प्रत्येक वर्ष फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के दिन 'माँ लक्ष्मी के जन्म दिवस' यानी की 'लक्ष्मी जयंती' के रूप में मनाने की परंपरा की शुरुआत हुई।

लक्ष्मी जयंती की किंवदंती :

लक्ष्मी शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द लक्ष्य से हुई है, जिसका अर्थ है लक्ष्य। लक्ष्मी धन, समृद्धि और भाग्य की देवी है। वह भौतिक और आध्यात्मिक विकास भी प्रदान करती है। वह अपने भक्तों को दुःख और संकट से बचाती है। वह भगवान विष्णु की पत्नी है और उन्हें 'श्री' भी कहा जाता है। विष्णु पुराण के अनुसार लक्ष्मी भृगु और ख्याति की पुत्री है। ऋषि दुर्वासा के शाप के कारण उन्होंने स्वर्ग को छोड दिया और क्षीरसागर को अपना घर बना लिया। वह गुरु शुक्राचार्य के साथ-साथ चन्द्र ग्रह की बहन है। जब देवों और दानवों से सागर का मंथन किया, तो समुद्र से चन्द्र और लक्ष्मी का जन्म हुआ था जो धन और समृद्धि के सर्वश्रेष्ठ रूप माना जाता है।

लक्ष्मी जयंती की पूजा विधि :

* सर्व प्रथम इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सभी कार्यों से निवृत्त होकर स्नान आदि कर साफ वस्त्रधारण करे। उस में से पीले वस्त्र पहनकर माँ लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।

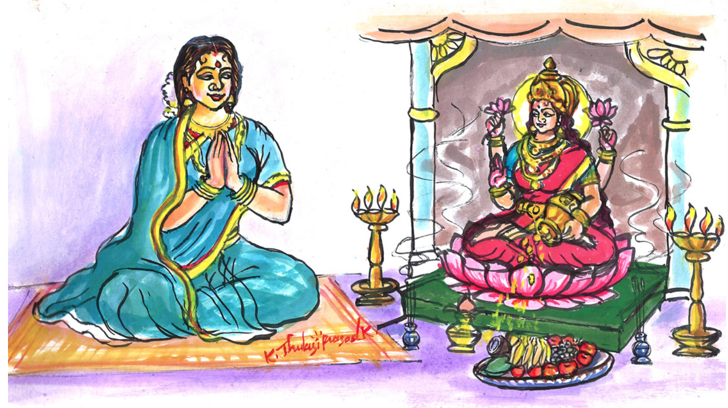

* अब मंदिर में आसन बिछाकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ जाए।
* इसके बाद एक लकडी की चौकी पर गंगा जल छिड़क कर लाल रंग का कपडा बिछाएँ और माँ लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित करे।
* अब एक लोटे में गंगाजल भरकर तीन बार आचमन करें, फिर माता को लाल रंग फूल चढ़ाएँ और माता का श्रृंगार करे।
* माता को पंचामृत का भोग लगाएँ और धूप-दीप कर लक्ष्मी चालीसा का पाठ करें। तथा मंत्रों का जप कर माता की आरती करे।
* लक्ष्मी जयंती पर भक्त लक्ष्मी होम करते हैं। होम के दौरान देवी लक्ष्मी सहस्रनामावली और श्री सूक्तम के 1008 नामों का पाठ किया जाता है।
* लक्ष्मी जयंती के दिन महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए कमल के फूलों को शहद में डुबोकर उपयोग किया जाता है।
* यदि मुमकिन हो तो इस दिन माँ लक्ष्मी को तांबे, सोने या चाँदी का कमल चढ़ाना चाहिए। इससे माता अत्यंत प्रसन्न होती है और अपने भक्तों पर सदैव कृपा दृष्टि बनाए रखती है।

पूजा में शामिल करनेवाली चीजें :

लक्ष्मी की पूजा में अनाज, गुड़, हल्दी और अदरक अवश्य शामिल करना चाहिए। माता लक्ष्मी को ये चीजें अत्यंत प्रिय है। इन चीजों को पूजा में रखने में ध्यान रखें। साथ ही कोशिश करे कि माता को कमल का फूल अवश्य चढाए, यदि किसी कारणवश कमल का फूल नहीं मिलता है तो लाल रंग का फूल चढ़ाए। लाल रंग माता को अत्यधिक पसंद है।

पूजा के बाद किए जानेवाले कार्य :

* लक्ष्मी जयंती के दिन पूजा पाठ करने के बाद दान-पुण्य करें। ऐसा करने से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होगी और आपकी सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करेगी।

* इस दिन पूजा-पाठ करने के बाद 5 से 7 कन्याओं को खाना खिलाए और दान-दक्षिणा दे। इससे घर में यश और सुख-समृद्धि आती है। हालांकि कुछ क्षेत्रों में पूजा की पद्धति में अंतर है, फिर भी पूजा करने में अंतर होने पर भी कन्या पूजन अति उत्तम बताया गया है। इससे माता की कृपा मिलती है।

लक्ष्मी माता के आशीर्वाद प्राप्त करने का मार्ग :

माँ लक्ष्मी का सीधा संबंध संपन्नता से होता है। ऐसे में माना जाता है कि जो कोई भी इंसान लक्ष्मी जयंती के दिन सही ढंग से पूजा, अर्चना करता है, उसके लिए जीवन में सफलता का मार्ग आवश्य खुलता है। इसके साथ ही वह मनुष्य हमेशा आर्थिक तरक्की पाता है और उसका जीवन ऐश्वर्य और वैभव से गुजरता है। प्रत्येक सप्ताह में शुक्रवार के दिन माँ लक्ष्मी की पूजा के लिए निर्धारित किया गया है। लेकिन शरद पूर्णिमा के दिन अगर कोई भी भक्त माँ लक्ष्मी की प्रसन्नता हासिल कर ले तो माना जाता है कि, उस व्यक्ति को जीवन में कभी भी पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं होती है।

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT

SAPTHAGIRI

(MONTHLY)
FORM IV
See Rule 8

1. Place of Publication	:	TIRUPATI
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sri P. Ramaraju, M.A.,
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Special Officer, T.T.D.Press Building, K.T.Road, Tirupati - 517 507.
4. Publisher's Name	:	Dr. K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D. Press Building, 2nd Floor, K.T.Road, Tirupati - 517 507.
5. Editor's Name	:	Dr. V.G.Chokkalingam, M.A., Ph.D.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Building, 2nd Floor, K.T.Road, Tirupati - 517 507.
6. Name and address of individuals who own the News paper and partners or share holders holding more than one percent of the Total Capital	}	Tirumala Tirupati Devasthanams

I, K. Radha Ramana, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

TIRUPATI
Date : 28-2-2025

(Sd.) Dr. K. Radha Ramana
Signature of the Publisher

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

पाशुरम 11 (तिरुवायमोलि के चौथे दशक का) में आल्वार कहते हैं कि भगवान को अर्पित पाशुरम दशक को गानेवाला भक्त वानवर (देवताओं) के समान आनंद पायेगा।

पाशुरम 5 (दशक 6 का 9 वाँ तिरुमोलि) में आल्वार भगवान से प्रार्थना करते हैं कि ''हे तिरुवेंगडम् के वासी! क्षीरसागर शयनी! हे पृथ्वी पर अवतरित देव! हे सबके अधिष्टाता! सर्वलोक व्यापी! क्या आप अपने को मुझसे छिपाना चाहते हैं? मेरे शरीर में रहते हुए भी क्यों दूर हो रहे हैं? मुझ पर कृपा कीजिए!''

द्वितीय तिरुवायमोलि के आठवें दशक के प्रथम पाशुरम में नम्माल्वार अपनी व्यथा को व्यक्त करते हैं। अपने को वेंकटेश्वर की प्रेमिका (पत्नी) के रूप में मानकर सखियों को संबोधित कर कहते हैं - ''हे सखियों! मैं तुम लोगों के एक शब्द का उत्तर नहीं दे पा रही हूँ। मैंने वेंगडम् के अधिदेव को चाहा। सोचा कि वे गरुड पर अवरोहित हो आयेंगे। मेरे हाथों की चूडियाँ गिरती जा रही हैं (विरह से हाथ क्षीण हो गये हैं)। मेरा शरीर कृशित हो रहा है। मैं चिंताग्रस्त हूँ।''

तीसरे तिरुवायमोलि (9 वें दशक) के आठवें पाशुरम में वे मानवों को बताते हैं कि ''श्री वेंकटेश्वर की मूर्ति वेंगडम् पर विलसित है। वे मानवों के पाप और पुण्यों को जानते हैं। सबको दूर रखकर मानव को पवित्र बनाते हैं और पुनर्जन्म राहित्य प्रदान करते हैं। जो वेंगडम् पहुँचकर उनकी सेवा रत हो जाते हैं, वे देवता ही बन जाते हैं। जन्म और मृत्यु के क्रम से मुक्त होते हैं। यह सब भगवान की महिमा ही है।''

5 वें तिरुवायमोलि के 10 वें दशक के पाशुरम 6 में नम्माल्वार कहते हैं कि ''नीलमेघश्याम माधव, श्रीलक्ष्मी पति, श्रीकृष्ण, पूतना संहारक भगवान सब एक ही हैं। श्री वेंकटेश्वर के रूप में वेंगडम् पर वास कर रहे हैं।''

''7 वें तिरुवायमोलि के दसवें दशक के आठवें पाशुरम में नम्माल्वार जोर देकर कहते हैं कि जो जगत में एक मात्र भगवान हैं, अद्वितीय हैं, समस्त सृष्टि के अधिनायक हैं, तिरुमलिरुंशोलै पहाड पर रहते हैं, तिरुप्पारकडल नगर में रहते हैं, क्षीरसागरवासी हैं, श्रीलक्ष्मीपति हैं, वैकुण्ठवासी हैं वे ही तिरुवेंगडम् पहाड पर भी रहते हैं। आप के अधीन में

माया है, समस्त प्रकृति है। शब्द, कार्य, मन, आत्मा सब उनको एक क्षण मात्र के लिए भी भूल नहीं सकते।''

पेरियाल्वार

पेरियाल्वार का जन्म श्रीविल्लिपुत्तूर में हुआ। यह गाँव पांड्य देश की राजधानी मदुरा के पास है। ये श्री आंडाल के पोषित पिता हैं। श्री आंडाल को ही गोदादेवी और सूडिक्कोडुत्त नाच्चियार कहते हैं। गोदादेवी, भगवान के लिए बनी फूल माला को पहले पहनकर देखती थी और

बाद को ही भगवान को माला अर्पित करती थी। पिता माला बनाते और गोदा उसे पहनकर देखती। पेरियाल्वार अपने को यशोदा मानकर भगवान की सेवा करते थे। श्रीकृष्ण और वेंकटेश्वर को उन्होंने एक ही माना है। पेरियाल्वार ने अपने सात पाशुरों में इसी दृष्टि से भगवान को संबोधित किया है। आल्वार ने ''तिरुप्पल्लांडु'' और ''तिरुमोलि'' भगवान की प्रशस्ति में प्रस्तुत किया है। इनमें आपने वामनावतार की घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है। बलि के पुत्र नमुचि ने वामन के शरीर को विस्तृत करने का आक्षेप किया था। इस पर रुष्ट होकर भगवान ने उसे उछाल फेंका था। इसी प्रकार रावण को मारने और विभीषण को राज्य देने पर भी आक्षेप हैं।

5 वें तिरुमोलि के प्रथम दशक के तीसरे पाशुरम में वे यशोदा बन जाते हैं। यशोदा के रूप में चंद्रमा को संबोधित कर वे कहते हैं कि ''हे चन्द्रमा! तुम कितनी ही विस्तृत परिधि में अपनी चाँदनी को प्रसरित करो, फिर भी मेरे पुत्र कृष्ण के मुँह की कांति के सामने फीके ही रहोगे, ये आजकल वेंगडम् में रह रहे हैं। ये अपना हाथ उठाकर तुम्हें संकेत करते हैं। आओ! उनके पास त्वरित गति से आ जाओ।''

''तिरुमोलि'' 6 के द्वितीय दशक के पाशुरम 9 में आल्वार यशोदा बनकर कौए से एक लकडी लाने के लिए कहते हैं, क्योंकि उसे लेकर कृष्ण को पशुपालन के लिए जंगल में जाना है।

7 वें ''तिरुमोलि'' के द्वितीय दशक के तृतीय पाशुरम और 9 वें ''तिरुमोलि'' के द्वितीय दशक के नौवें पाशुरम में पेरियाल्वार की यशोदा श्रीकृष्ण के दुरागतों पर और उनकी नटखट चेष्टाओं पर नाराज होती हैं। गोपिकाओं के घरों में घुसना, उनके यहाँ के सामान को तोडना, वस्त्रों को फाडना आदि पर रुष्ट होकर यशोदा कहती है- ''हे तिरुवेंगडम् पर निवास करनेवाले! मेरे पास आ जाना! मैं तुम्हारे बालों को संवारूँगी, ''मरुवक'' फूलों से तुम्हारे जूडे को गूँथूँगी।''और कहती है कि ''हे नन्हें कृष्ण! हे सद्गुण संपन्न! गोवर्धनगिरिधारी! गोपालक कृष्ण! सिर पर पानी का घडा रखकर गोपिकाओं के साथ नाचनेवाले कन्हैया! वेदों की प्रतिमूर्ति, सुंदर विग्रह! जल्दी आ जा! नटखटबाजी को छोड शीघ्र आ जा! मैं दूसरों के द्वारा तुम पर की गयी शिकायतों को सहन नहीं कर सकती!''

तीसरे ''तिरुमोलि'' के तीसरे दशक के चौथे पाशुरम में यशोदा कहती है- ''सुगंधित हवाओं से विराजित वेंगडम् के वासी! हे बलवान वृषभ के समान

घूमनेवाले! मैंने तुम्हारे लिए सुंदर छाता रखा है, चप्पल और मुरली तुम्हारे लिए हैं। उनके बिना तुम जंगल के कंटकीले रास्तों पर घूम रहे हो! गायों और बछडों को लेकर जा रहे हो! हे मेरे लाल! मुझे तुम्हारे मृदु पैरों को देखकर दुःख हो रहा है। पद कमलों में काँटे चुभते हैं न! आँखों में जलन होता है न! तुम्हारा शरीर थक जाता है न! आ जाना! सब ले लेना!''

चौथे ''तिरुमोलि'' के पाँचवें दशक के प्रथम पाशुरम में आल्वार भगवान को पुकारकर कहते हैं- ''हे दयालू दामोदर! मेरे स्वामी! लंबी-ऊँची चोटियों और शिखरों से घिरे वेंगडम् को वास बनाकर सबकी रक्षा में लीन भगवान कौन हैं? आप ही हैं न!'' वे कहते हैं कि उन्होंने सुदर्शन चक्र की मुद्रा से अपने शरीर को चिह्नित कर लिया है। अब उनकी कृपा पाने की प्रतीक्षा मात्र है। अब वे बहुत समय तक रुक नहीं सकते। वे भगवान से प्रश्न करते हैं कि क्यों अब मैं प्रतीक्षा करूँ?''

श्री आंडाल

श्री आंडाल पेरियाल्वार की पोषिता पुत्री हैं। आल्वार ने उन्हें श्रीविल्लिपुत्तूर के तुलसी वन में प्राप्त किया था। आल्वार और उनकी पत्नी दोनों ने मिलकर श्री आंडाल का पालन-पोषण किया। श्री आंडाल को गोदादेवी भी कहते हैं। बचपन से ही आंडाल के मन में भगवान के प्रति भक्ति और श्रद्धाएँ थीं। गोदादेवी ने ''तिरुप्पावै'' और ''नाच्चियार तिरुमोलि'' की रचना की है।

जैसे जैसे वे बढ़ती गयी हैं, वैसे वैसे उनके मन में स्थानीय मूर्ति के प्रति प्रेम बढ़ता ही गया।

आठवें तिरुमोलि में गोदादेवी मेघों को संबोधित कर अपनी विरह वेदना को वेंगडम् के भगवान से निवेदित करने के लिए प्रार्थना करती हैं। अपना असहनीय दुःख, अनवरत बहनेवाली आँसुओं की धाराओं की बात, अनुपम प्रेम, ठंडी-ठंडी हवाओं से तीव्र बननेवाला विरह, विरह ताप से तपित और शुष्कित शरीर, हाथों से फिसलकर गिरनेवाली चूडियाँ आदि के बारे में निवेदित करने के लिए प्रार्थना करती हैं। और कहती है कि भगवान के विरह में उनकी निद्रा दूर हो गयी है, धैर्य और शक्ति शिथिल हैं। अब जीवन केवल भगवान के अधीन ही है।

आंडाल, गोविंद के गुणों का कीर्तन करती हुई कहती हैं -

''श्रीलक्ष्मी को वक्षःस्थल पर स्थान देनेवाले हे श्रीपति! मेरी कामना है कि आप मुझे अपने सीने से लगाएँ!

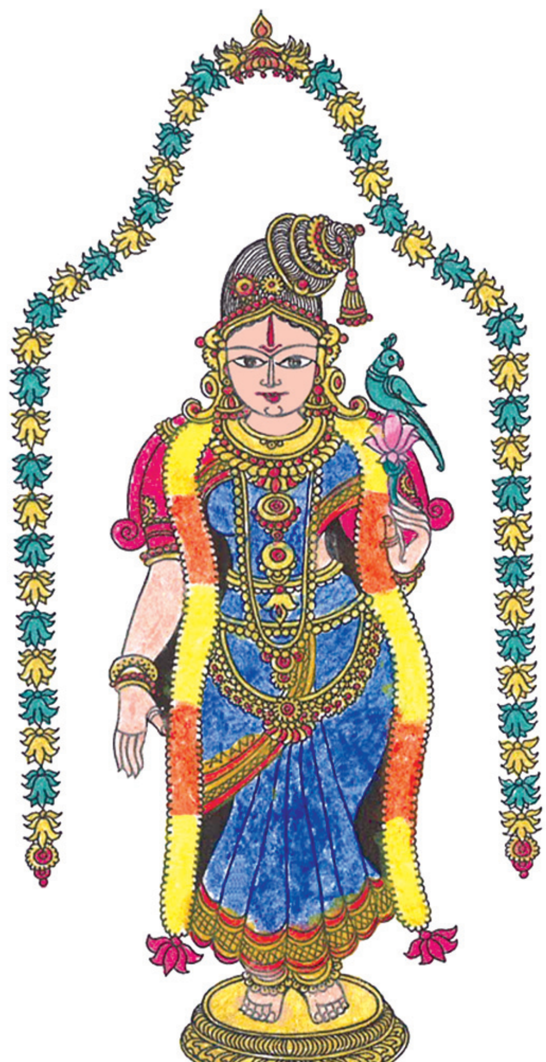

हिरण्याक्ष के हृदय को चीरनेवाली उंगलियों के हाथों से मेरी हाथों से छूटी हुई चूडियाँ लाकर पहनाएँ!''

वे नारायण से कहना चाहती हैं कि महाबलि से पृथ्वी को उपहार के रूप में पानेवाले वामन और तिरुवेंगडम् के निवासी क्यों उनके दिल के चोर हैं? उनके मन में क्यों घुसे हैं? बडे मच्छर के समान क्यों उन्हें सता रहे हैं?

वे भगवान के पाद पद्मों के सामने निवेदन करना चाहती हैं कि एक बार ही तो सही उनके मस्तक पर, कुचों पर कुंकुम से राग रंजित करें। उन्हें जीवन को सहने की शक्ति प्रदान करें।

पाशुरम 9 में वेंगडम् के मेघों से कहती हैं कि शेषशायी का नाम बदनाम हो रहा है (गोदा की रक्षा में न जाने के कारण)। वे सर्वकाल-सर्वावस्थाओं में एकमात्र रक्षक हैं। लगता है कि वे अपना कर्तव्य भूले हुए हैं। इस लोक के भक्त भी शायद इस बात पर ध्यान नहीं दे रहे हैं कि

भगवान ने पृथ्वी पर अपनी भूल (या तिरस्कार की भावना) से एक अबला को त्यागा है। (गोदा को स्वीकारा नहीं) 8 वें ''तिरुमोलि'' के दसवें पाशुरम में आंडाल जी स्पष्ट कहती हैं कि पेरियाल्वार की पुत्री गोदादेवी से प्रस्तुत गीतों को गानेवाले भक्त भगवान के होंगे। (भगवान उन्हें अपना लेंगे)।

गोदादेवी ने श्री वेंकटेश्वर को अपनी आराधना द्वारा आकर्षित करने का सतत प्रयत्न किया। अपनी नियमपूर्वक पूजा विधि द्वारा तीस दिन पर्यन्त पूजा व्रत रखा। तमिल मार्गली मास (= धनुर्मास = अंग्रेजी दिसंबर-जनवरी) में उन्होंने अखण्ड व्रत रखा। उस समय गाये गये (गाने के लिए रचे गये) पाशुरों में से प्रथम पाशुरम में ही उन्होंने कामदेव को संबोधित किया (तिरुमोलि 1 और पाशुरम 1)। उसमें उन्होंने कहा है कि ''तै'' (जनवरी-फ़रवरी) महीने में भगवान के द्वारा विहरित सभी प्रान्तों को अलंकृत किया है। उनके सामने वे प्रणमित हुई हैं। वे कामदेव से प्रार्थना कर रही है कि वे एक अवसर प्रदान कराये वेंगडम् के देव से मिलने का।

प्रथम तिरुमोलि के तृतीय पाशुरम द्वारा कामदेव को सूचना देती है कि वे दिन की त्रि-संध्याओं में तीन बार उनकी उपासना करती हैं। ''दत्तूरा'' और ''पलासा'' फूलों से पूजा करती हैं। गोदा की इस संदर्भ में एक मात्र इच्छा है कि ''गोविंद'' का नाम उनके मस्तिष्क में अंकित हो जाय! इस दिशा में कामदेव भी उनके मन में अतीव प्रेम उपजाने की दिशा में पुष्पबाण का प्रयोग करें ताकि भगवान वेंगडवन के प्रति उनका मन उन्मुख हो जाय। इससे वेंगडम् के नाथ पर झूठे प्रेमी होने का दोष भी न लगे। वे असत्य प्रेमी न कहलाये जाय। उनको अपयश न मिले कि उन्होंने गोदादेवी को अपनाया ही नहीं और उन्होंने गोदा के प्रति सही ढंग से व्यवहार भी नहीं किया।

चौथे तिरुमोलि के दूसरे पाशुरम में कामदेव को नर-नारी के बीच संधि करानेवाले या उनको मिलानेवाले के

रूप में वर्णित करती हैं। वे वामन को भी प्रेरित करने के लिए कहती हैं जो तिरुवेंगडम् पर आनंद से रह रहे हैं और तिरुक्कन्नपुरम् में भी रहते हैं। वे प्रेम भरे हृदय से उनकी ओर (गोदा की ओर) दौड आये, उनके हाथ अपने हाथों में लें और आलिंगन बद्ध करें।

पांचवें तिरुमोलि के द्वितीय पाशुरम में गोदादेवी कोयल को आमंत्रित करती हैं। चंपक पुष्पों से मधु पीनेवाले कोयल से मधुर स्वर में कुहू-कुहू गाने के लिए कहती हैं। धवल शंखधारी वेंगडम् के अधिनायक ने उनके सामने प्रत्यक्ष होने से तो मुँह मोड लिया है, लेकिन गोदा के हृदय में स्थिर हुए हैं। उन्हें तंगकर रहे हैं।

उनके जीवन को वे दुर्भर बना रहे हैं। विनोद भावना से उनके दुःख और कष्टों को देख रहे हैं। गोदादेवी कोयल को अपने पक्ष में रहने के लिए कहती हैं। गाकर तिरुवेंगडम् के नाथ को उनकी ओर आकृष्ट करायें, गोदा की कोयल से प्रार्थना है।

दसवीं तिरुमोलि के पाँचवें पाशुरम में वे कोयलों को चेतावनी देती है। वे अपने कर्कश ध्वनियों से दूर रहें। वे गोदादेवी के पक्ष में आकर सुंदर गीत गाये। जब वेंगडम् के नाथ गोदा की ओर सकारात्मक व्यवहार से आगे आये तब आनंद से नाचें। वे कोयलों को आश्वासन देती हैं कि उचित समय पर वे स्वयं उनको बुलायेंगी। तभी उनको वे मधुर संगीत सुनायें। जब गरुडध्वज उनकी ओर दया बरसायें तभी वे आयें और गायें।

दसवीं तिरुमोलि के आठवें पाशुरम में गोदादेवी मेघों को संबोधित करती हैं। उनसे गोदाजी कहती हैं कि मृण्मय पात्र पर लगे मोम के समान है। गर्मी के लगते ही पिघलते हैं। वे जाकर वेंगडम् पर विलसे दामाद को पिघलाकर उनकी ओर आकृष्ट करायें। उनके मन और मस्तिष्क में गोदादेवी का प्रतिबिम्ब उत्पन्न करें।

क्रमशः

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

होली का अर्थ है 'पवित्रता।' यह त्योहार हिन्दुओं का सबसे पवित्र व प्रसिद्ध मन भरा हुआ त्योहार है। इस त्योहार में स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे, युवा, वृद्ध सभी अत्यंत उत्साह से प्रसन्नतापूर्वक होलिका का दहन करते है। सब लोग सामूहिक रूप से गीत, फाग आदि गाते है और रंगों से होली खेलते हैं। होली माने रंगों का त्योहार है। इस दिन लोग हँसी-खुशी से यह त्योहार बहुत खुशी से मनाते है। यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है। आज इस त्योहार विश्वभर में मनाया जाने लगा है। रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। पूर्णिमा तिथि में स्नान, दान, सत्यनारायण भगवान की कथा का बड़ा ही महत्व है। दूसरा दिन होली से सब खुशी के साथ मनाते है।

होली भारत और नेपाल में मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध त्योहार है। यह त्योहार रंगों के त्यौहार के रूप में जाना जाता है, होली भारत का अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाका नाम से मनाया जाता था। वसंत की ऋतु में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कारण इसे 'वसंतोत्सव' और 'काम-महोत्सव' भी कहा गया है। इसी दिन गाँव के किसान अपनी फसल के नये दाने अग्नि को चढ़ाते हैं। होलिका की अग्नि में नये अन्न चढ़ाने के बाद ही किसान नया अन्न खाना शुरू करता हैं।

होली के पर्व से अनेक कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कहानी है प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु की। माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। अपने बल के अहंकार में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद विष्णु भक्त था। प्रह्लाद की विष्णु भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने श्री नारायण भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती।

होलिका राक्षसी भक्त प्रह्लाद की बुआ थी। जब हिरण्यकशिपु कई तरीकों से भक्त प्रह्लाद को न मार पाया तब जा के अपने भाई असुर हिरण्यकशिपु के आदेश पर प्रह्लाद को मारने के लिए आग में प्रह्लाद बच्चे को लेकर बैठ गयी थी। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद बच गया। विष्णु भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली

होली
त्यौहार की पवित्रता और विशेषता

- डॉ.पी.बालाजी

जलाई जाती है। प्रतीक रूप से यह भी माना जाता है कि प्रह्लाद का अर्थ आनन्द होता है। वैर और उत्पीड़न की प्रतीक होलिका (जलाने की लकड़ी) जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रह्लाद (आनंद) अक्षुण्ण रहता है।

होली से सम्बन्धित मुख्य कथा के अनुसार एक नगर में हिरण्यकशिपु नाम का दानव राजा रहता था। वह सभी को अपनी पूजा करने को कहता था, लेकिन उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का उपासक था। होली को हिंदू भगवान विष्णु और उनके भक्त प्रह्लाद के सम्मान में बुराई पर अच्छाई की विजय के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है।

होली महोत्सव से जुड़ी एक और पौराणिक कहानी राधा और कृष्ण से जुड़ी है। भगवान विष्णु के आठवें अवतार के रूप में, श्रीकृष्ण को कई लोग सर्वोच्च भगवान के रूप में देखते हैं। ऐसा कहा जाता है कि कृष्ण का रंग नीला था क्योंकि किंवदंती के अनुसार, जब वह शिशु थे

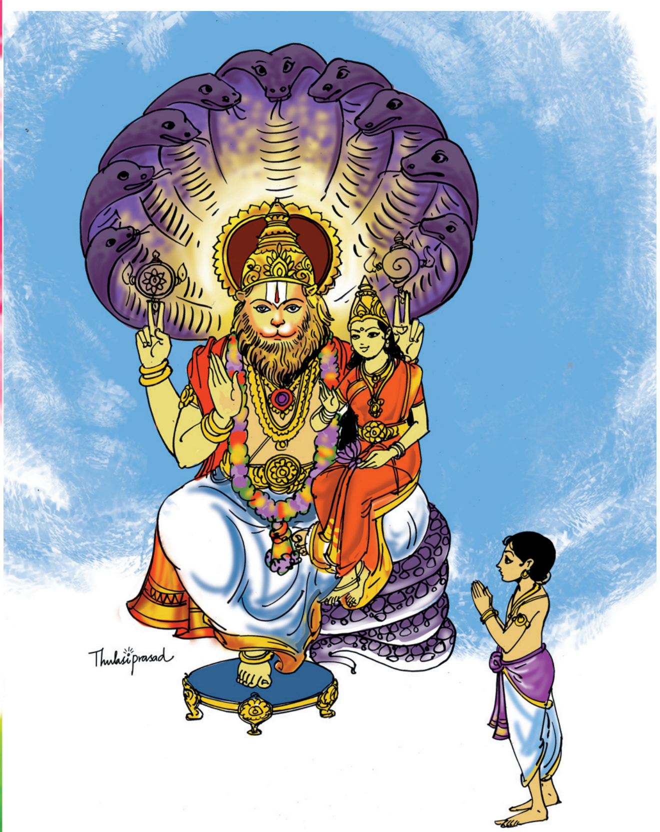

तो उन्होंने एक राक्षस का जहरीला दूध पी लिया था। कृष्ण को देवी राधा के प्रेम हो गया, लेकिन उन्हें डर था कि उनकी नीला रंग देखकर राधा उनसे प्रेम नहीं करेंगी लेकिन राधा ने कृष्ण को अपनी त्वचा को रंग से रंगने की अनुमति दी, जिससे वे एक सच्चे जोड़े बन गए। होली पर लोग कृष्ण और राधा के सम्मान में एक-दूसरे के ऊपर रंग लगाते हैं।

भारत के सबसे बड़े उत्सवों में से एक होली रंगों, उत्साह और कई अन्य चीजों के साथ वसंत ऋतु का प्रतिनिधित्व करने वाला एक आनंदमय त्योहार है। हर साल हम बुराई पर अच्छाई की जीत मनाने के लिए इस दिन को मनाते हैं, जो मार्च की शुरुआत में फाल्गुन महीने में आता है। हालांकि होली एक प्राचीन हिंदू त्योहार है लेकिन यह लगभग पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इस साल रंगों का त्योहार 14 मार्च, 2025, शुक्रवार को मनाया जाएगा।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार होली का त्यौहार जीवन के सभी दुखों और कष्टों से मुक्ति दिलाती है। बुराई पर अच्छाई की जीत इस पावन पर्व का बड़ा महत्वपूर्ण विशेषता है।

अहकूटा भयत्रस्तैः कृता त्वं होलि बालिशैः।
अतस्वां पूजयिष्यामि भूति-भूति प्रदायिनीम्।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

विष्णु देव की चिंता :

विष्णु देव अपने आप में इस रूप में प्रश्न करने लगे थे। उस देव मुनि को ब्रह्म से वेंकटाद्री पर मेरी अनुपस्थिति के बारे में बताना ही क्यों था? ब्रह्म के द्वारा भेजा गया नारद को मुनियों के पास जाकर प्रश्न ही क्यों करना था? हमारी परीक्षा लेने आये भृगु को मुझे मारना ही क्यों था? इसे देख कर मेरे साथ नित्य अनुपाइनी के रूप में रहनेवाली लक्ष्मी मुझे छोड कर जाना ही क्यों था? अहो! मैं क्या करूँ? अपने कर्म से मैं कैसे मुक्त हो जाऊँ? कर्म से कोई बच नहीं सकता है। अद्भुत रूप में लक्ष्मी से अलग होने के इतने कारण हैं। अब चिंता करने से क्या लाभ है। चंद्रबिंब में रहनेवाली चंद्रिका की तरह लक्ष्मी मेरे अंदर ही रहेगी। किंतु सौभाग्य लक्ष्मी मुझे छोड कर चली गयी है। सिरि के हृदय में बसने के लिए तीनों लोकों में मुझे उसे ढूंढना होगा। उस सागर तनया का स्थूल शरीर अब कहाँ पर है? मालूम नहीं है। किंतु उस का सूक्ष्म शरीर मेरे अंदर ही बसा हुआ है। इसलिए चिंता नहीं है। फिर भी लोक हित के लिए अपने सर्वज्ञत्व को छिपाकर लक्ष्मी की खोज मुझे करनी चाहिए। अगर मैं चुप रहूँगा तो निर्दय कह कर कुछ मेरी निंदा करेंगे। स्नेह से वैकुंठ के सभासदों को सुपालन करने के लिए वैकुंठ को सौंप कर, भूदेवी और नीलादेवी को भी उन के संरक्षण में रख कर फिर माधव ने इस रूप में सोचा।

श्रीहरि का फिर से वेंकटाद्री पर लौटना :

इस प्रकार कुछ समय बीत जाने के बाद 'फिर से उस महालक्ष्मी को अपने वक्ष पर रखूँगा।' ऐसा निश्चय करके भूदेवी और नीलादेवी को देखकर उन्हें समझा-बुझाकर 'रमा देवी की खोज करके शीघ्र ही यहाँ ले आऊंगा।' ऐसा उन्हें बताकर, उन से हामी लेकर वैकुंठ को छोड कर श्रीहरि फिर से वेंकटाद्री पर्वत पर लौट आये। ऐसा बतानेवाले सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने कहा। "श्री महालक्ष्मी को ढूंढने वैकुंठ को छोड कर धरती पर वेंकटाद्री पहुँचनेवाले हरि ने वहाँ पर क्या किया?" ऐसा मुनियों के पूछने पर सूत ने इस रूप में कहा। "सुनिए! श्रीहरि वेंकटाद्री पर पहुँच कर वहाँ रहनेवाले श्री वराह स्वामी के और पुष्करिणी के दक्षिण में शोभित तिंत्रिणी वृक्ष के मूल में बने वल्मीक में प्रवेश

कर गए। कई वर्षों तक किसी को दिखाई नहीं दिया। बांबी में रहते, धरती पर अट्ठाईस द्वापरांत के बाद कलियुग शुरू हो गया। तब धरती पर चोल राज धर्म से पालन कर रहा था। ऐसे समय में वरुण देव सही समय वर्षा कर रहे थे। पृथ्वी पर सकल सश्य श्यामल था। गायें बहु क्षीर दे रही थीं। पतिव्रत स्त्रियाँ, सतीव्रत पुरुष, माता-पितृ भक्त पुत्र धरती पर हुआ करते थे। ऐसे कलियुग के आदिकाल में कोल्हापुर पहुँचनेवाली लक्ष्मी को श्रीहरि के वैकुंठ छोड कर शेषाचल पहाड पर तिंत्रिणी वृक्ष के वल्मीक में वास करने का समाचार प्राप्त हुआ। वे अपने आप में दुःखी होकर चिंता करते हुए इस रूप में तर्क-वितर्क करने लगी।''

'मेरे लिए कमलनाथ! वैकुंठ छोड कर वल्मीक में अकेले छिप कर रहने लगे हैं। अहो! अब मैं क्या करूँ?।' वे शीघ्र ही कोल्हापुर छोड कर ग्वालिन के रूप में वेशधारण करके चोल राज की पत्नी के पास चली गयी। उस रानी के मणिमंदिर के पास पहुँचकर 'हरि को मैं कैसे तृप्त करूँ?' सोचते।

ब्रह्म और रुद्र का गाय और बछडा बन जाना :

लक्ष्मी के इस रूप में मन में सोचते समय महालक्ष्मी के भाव को समझ कर ब्रह्म ने रुद्र को साथ में ले आकर वहाँ पर धेनु का रूप धारण कर लिया। वह ऐसा है कि। कपिल वर्ण का सुडौल शरीर, मंगलकर श्रृंग युगल, काजल लगाए नेत्र, सुंदर कान, काला चमकनेवाला नासिका पुट, गुरुतर कंठ, बडा नोपुर, बडा उदर, उचित दीर्घ पूंछ, चमकनेवाली दृष्टि, शोभित जांघे, पूर्ण कुंभ जैसा थन, भार से केले के फल समान चार स्तनों के साथ क्षीर वारिधि में पैदा होकर उत्साह से रहनेवाली कामधेनु की तरह लक्ष्मी के पास आकर खडी हो गयी।

तब वाम देव (शिव) उसका बछडा बन गये। वह बछडा धवल वर्ण में चमकते अपनी माँ के पास दूध पीते उचलते-कूदते बाल क्रीडाएँ करने लगा। गाय और बछडे को देखकर लक्ष्मी ने पहचान लिया। ब्रह्म और रुद्र इस रूप में श्रीहरि को प्रयोजन पहुँचाने के लिए वेशधारण कर लिया है। लक्ष्मी तब उन दोनों को पकड कर लाकर उन्हें बेचने की कोशिश करने लगी। लक्ष्मी के बेचने की पुकार सुन कर चोल राज की पत्नी ने अपनी बेटी को दूध पिलाने उस गाय और बछडे को आवश्यक धन देकर खरीद लिया। ऐसा खरीद कर पहले से उन के पास रहनेवाले दो सहस्त्र धेनु समूह में उसे शामिल करने के लिए उसे गोप को सौंप दिया। बाद में लक्ष्मी सोचने लगी कि 'यह धेनु और बछडा आगे वल्मीक में रहनेवाले श्रीहरि का पोषण करेंगी। अब मुझे कोई चिंता नहीं है। कहीं भी हो स्वामी का सुखी रहना ही मेरे लिए संतोष का विषय है।' ऐसा सोचती वे शीघ्र फिर से कोल्हापुर चली गयीं। तदुपरांत ब्रह्म स्वरूपी गाय प्रति दिन बाकी गायों के साथ चरती श्री वेंकटशैल पर चढ कर अपने दूध को वल्मीक के अंदर रहनेवाले श्रीहरि को अर्पित करने लगी।

श्रीहरि गाय के उस क्षीर को पीकर अति प्रसन्न थे। मन में ही ब्रह्म और रुद्र की वे प्रशंसा करने लगे थे। उस समय चोल भूपाल की पत्नी ने अपनी पुत्री के लिए दूध लेने इस के पहले खरीदी गयी गाय को अपने सदन में लाने के लिए कहा। उन्होंने गाय को सहलाते हुए दुहने

की कोशिश की है। उस के थन में दूध नहीं था। तब उन्होंने मन में इस रूप में सोचा। 'गाय के थन को देखकर खरीदा। पूर्ण कलश जैसे थन को देखकर खरीदा। किंतु आश्चर्य से उस में दूध ही नहीं है। यह कौन सा पाप है?' इस प्रकार चिंता करते हुए कुछ दिनों तक उस दिव्य धेनु पर ध्यान रखते हुए उस की परीक्षा ली। फिर भी उससे दूध नहीं मिला। तब उन्होंने गोप को बुला भेज कर उससे इस रूप में कहा।

चोलराज की पत्नी गोप को डांटना :

"गोपाल! इस बडी गाय के थन में दूध क्यों नहीं है? यह कौन सा पाप है? कहीं तुम ने जंगल में ही इस के दूध को पी लिया क्या?" रानी की बातों को सुन कर गोप ने कहा। "आप की गाय का दूध मैंने नहीं पिया। शायद बछडे ने पी लिया होगा।" कहने पर "अपने घर में रहनेवाला बछडा कैसे दूध पी सकता है? तुम झूठ बोल रहे हो।" गुस्से में रानी ने गोप को डांट सुनायी। तब उसने डर कर कहा। "गाय के थन ने ही दूध पी लिया है। मैंने कोई पाप कर्म नहीं किया।" तब राजा ने उस पर गुस्सा करते हुए उसे बंदी बनाकर खूब पिटवाया। वहाँ से उसे बाहर भी निकाल दिया। रोते हुए उसने जंगल में गाय का पीछा किया। तब उसने देखा कि वह गाय बाकी गायों के साथ नहीं चरते अलग होकर शेषाचल पर्वत पर चढ कर वल्मीक में छिपे हुए श्रीहरि को दूध देने लगी। इसे देखकर तब गोप ने गुस्से में अपने हाथ के परशु से उस पर वार किया। तब विष्णु देव "इस गाय ने मुझे माँ की तरह हर दिन दूध देकर मेरी रक्षा की है। ऐसी गाय को मार कर रहा है। इसे मैं कैसे सहन कर सकता हूँ। ऐसा सोचते गाय को बचाने अपने सिर को बांबी के ऊपर से गाय की आड में रख दिया। तब गोप के द्वारा चलाया गया परशु हरि के मस्तक पर जा कर लगा। तब हरि के मस्तक से रुधिर बहने लगा। हरि का रुधिर तब सप्त ताल वृक्ष की तरह उन के सिर के ऊपर से पृथ्वी पर गिरने लगा। यह देखकर गोप डर कर नीचे गिर कर मर गया। इसे देखकर गाय शेषाद्री से उतर कर राजा की सभा में गयी। वहाँ पर वह नीचे लुढकती आंखों से आँसू निकालने लगी। इसे देखकर राजा को चिंता हुई। राजा ने तब इस रहस्य को जानने अपने चरों को जंगल में भेजा।"

राजा के गुप्त चर गाय का पीछा करते गए। वह गाय वेंकटाद्री पर चढकर वल्मीक के पास जाकर रुक गयी। बांबी से रुधिर का बहना, गाय का वहाँ खडे होकर थन से दूध देना, गोप का वहाँ पर गिरे रहना आदि को देखकर गुप्त चरों ने डर कर भागते हुए आकर राजा को सब कुछ बता दिया। राजा शीघ्र ही पालकी में बैठ कर परिवार समेत वेंकटाद्री पर पहुँच कर वहाँ घटित पूरे दृश्य को देखा। अपने मंत्रियों की तरफ देखकर 'इस वल्मीक से ऐसा रुधिर का बहना, गोप मर कर यहाँ पर गिरा पडना, गाय के द्वारा आँखों से आँसू बहाने का कारण क्या है?' इस रूप में वितर्क करते समय श्रीहरि वल्मीक में से अति रक्त सिक्त शरीर से, आँखों में आँसू निकलते, गद्गद कंठ से, शंख, चक्र धारण करके बाहर निकले। राजा को देखकर इस रूप में कहा। "हे! पापात्मा! मैं बांबी में छिपा हुआ था। आज तुम्हारा गोप ने यहाँ पर आकर सदा मुझे दूध देनेवाली गाय के सिर पर मारा है। परशु से अतिक्रूर ढंग से मेरे सिर पर मारा। इस घोर पाप के कारण वह मर गया है। सुनो राजा! मैं अनाथ हूँ, माता-पिता न होने से, पत्नी-बच्चे न होने से, बंधुजनों का न होने से, अति गरीब बन कर, परदेशी बन कर यहाँ पर आया। शेषाचल पर रहनेवाली इस बांबी में छिपा हुआ था। तब माँ समान इस धर्म सुरभि ने मुझे नित्य दूध देकर मेरी रक्षा की है। तुम्हारा पशुपालक के द्वारा गाय को मारने

का पाप फल उसने प्राप्त किया। वह तुम्हारा है इसलिए उसे मरने का पाप फल तुम को भी भोगना पडेगा। तुम नीच दशा को प्राप्त करके धरती पर पिशाच बन कर रहो।'' श्रीहरि के इस शाप को सुन कर डर कर राजा बेहोश होकर धरती पर गिर गया। थोडी देर के बाद राजा ने बेहोश से होश में आकर उठ कर सामने लीला मानुष विग्रह के रूप में खडे श्रीहरि को साष्टांग दंडवत करके मुकलित हस्तों के साथ गद्गद स्वर में रोते हुए स्वामी को देखकर इस रूप में कहा।

चोलराज का पश्चाताप :

''अहो देव! जानबूझ कर मैंने ऐसा नहीं किया। आप ने अति कठोर शाप देकर मुझे संकट में डाल दिया। मैं इसे कैसे सहन कर सकता हूँ। हे जगदीश्वर! मुझ पर कृपा करके इस कठोर शाप से मुक्त होने का उपाय मुझे आप बताइए।'' आर्ति बन कर इस रूप में राजा के कहने पर कमलाक्ष ने उस की तरफ देखकर इस रूप में कहा। ''हे नृपति! तुम्हारा कोई दोष नहीं है, किंतु मैं इसे नहीं जानता था। व्यर्थ ही तुम को शाप दिया। मेरा शाप व्यर्थ नहीं जायेगा। अब मैं क्या करूँ? शेषाचल पर बांबी में दुबक कर छिपा हुआ था, मुझे तितर बितर करके मुझे कष्ट पहुँचाया गया। इसलिए सत्य को नहीं जानते हुए बुरे रूप में तुम सुजन को दुष्ट समझ कर कठोर शाप दिया। धरती पर मेरे इस शाप को कोई रोक नहीं सकता है। तुम पर वत्सलता को भी मैं छोड नहीं सकता हूँ। इसलिए तुम पर रहनेवाली करुणा के कारण मुझे बडा दुःख हुआ है। पिशाच की गति और दुःख मेरे कारण ही तुझे प्राप्त हुए हैं। दोनों को दुःख हुआ है। आकाश राज प्रेम से और संतोष से अपनी पुत्री के साथ मेरा विवाह करते समय मेरे सिर पर एक किरीट को रखो। वह किरीट ऐसा होना चाहिए कि सौ भारु (एक नाप, जो मण से बडा) सुवर्ण से

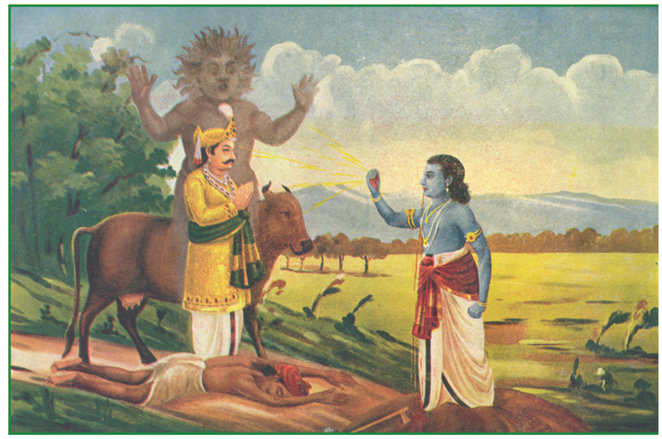

तथा अनेक मणि-माणिक से जटित होना चाहिए। मैं उसे हर शुक्रवार को छे घडियों तक धारण करूंगा। तब मेरे नेत्रों से आनंद के भाष्प निकलेंगे। उन छे घडियों में तुम को सुख प्राप्त होगा।'' श्रीहरि ने ऐसी आज्ञा दी। उसे सुनकर चोल राज शापग्रस्त होकर लौट गए। तब श्रीहरि बांबी में चले गए। सिर पर लगी चोट के दर्द को वे सहन नहीं कर पा रहे थे। इसलिए उन्होंने बृहस्पति का स्मरण किया। बृहस्पति गुरु वल्मीक के पास आये। उन्हें देखकर श्रीहरि अपनी दीन कथा को सुनाया। हीन स्वर में हरि ने इस रूप में कहा। ''हे देव देशिक! सादरता के साथ सुनो। काल, कर्म, ग्रहगति वश गोप ने मेरे सिर पर परशु से मारा है। इसलिए दर्द अधिक हो गया है। दर्द को दूर करनेवाले औषध के बारे में तुरंत ही बताओं।'' हरि के इस रूप में कहने पर बृहस्पति शांत मन से इस रूप में कहा। ''हे महात्मा! आपके लिए काल, कर्म, ग्रहगति कैसे हो सकते हैं? आप की महिमा को दूसरे नहीं जानते हैं। उन के बारे में आप को ही मालूम हैं। मुझ से पूछा इसलिए बताऊंगा। हे कमलनाथ एक औषध के बारे में आप को बताऊंगा। अच्छी तरह सुनिए। आक की रुई को दूध में भिगोकर सिर के बीच में रखने से दर्द कम हो जायेगा।'' यह कह कर हरि को नमस्कार करके सुरगुरु बृहस्पति लौट गए।

क्रमशः

आम्र के पल्लव-कोयल की कुहुक नववर्ष 'उगादि' के सूचक

- डॉ. सुमनलता

''दिखते ही लाली से भरे आम्र के पल्लवन
सुनते, पंचम स्वर का गुंजन
करते, नवजीवन का आह्वान'' (स्वरचित)

भारतीय संस्कृति में 'वसन्त नवरात्रि', 'गणेश नवरात्रि' और 'शरन्नवरात्रि' अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वर्ष का आरंभ वसंत ऋतु से मनाने का मुख्य कारण है - प्रकृति में दिखने वाले सकारात्मक परिवर्तन। अखण्ड और अगोचर काल, अर्थात् समय को, प्राचीन काल से ही मनीषियों ने और द्रष्टाओं ने, हमारी सुविधापूर्वक काल गणना के लिए आयनों में, वर्षों में, ऋतु और माहों में, पक्षों में और वासरों के साथ-साथ घण्टों में, मिनटों में और घड़ी तथा विघड़ी तक के सूक्ष्मतम रूप में गोचर परिवर्तनों के आधार पर विभाजित किया है। सूर्य-चन्द्र और बृहस्पति आदि ग्रहों के चलन के आधार पर आज भी हम समय की गिनती कर रहे हैं। तीज और त्योहार मना रहे हैं।

इसी शुभ संकल्प के साथ कि समय के गोचर और अगोचर परिवर्तनों से हम सबका भला हो, हम समय का स्वागत करते हैं।

तेलुगु भाषी ही नहीं बल्कि कर्णाटक और महाराष्ट्र की प्रजा भी वर्ष का आरंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष का प्रथम दिवस मानकर, त्योहार मनाती हैं।

वराहमिहिर के आधार पर चांद्रमान के अनुसार, वर्ष का आरंभिक माह चैत्र को मान्यता मिली है। ब्रह्म से इसी चैत्र ''शुक्ल प्रतिपदा'' से इस संसार की रचना की थी, इसे प्रामाणिक माना गया है। यही हमारे लिए 'उगादि' पर्व है। नवीन आशाओं के किसलयों के साथ नववर्ष आरंभ करने का उत्साह।

युग की आदि ''युगादि'' - यही शद्ब - धीरे-धीरे ''उगादि'' बन कर प्रचलन हुआ है। उगादि के आरंभ होने के संदर्भ में कई पौराणिक और लोकगाथाओं के साथ-साथ ऐतिहासिक मान्यतायें भी प्रचार में है।

पौराणिक गाथा से ज्ञातव्य है कि भगवान श्री महाविष्णु ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के ही दिन मत्स्यावतार का धारण कर, सोमकासुर का वध किया था और वेदों का उद्धार कर, ब्रह्म को सौंपा।

इतिहासों का कथन है कि चक्रवर्ती विक्रमादित्य का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ।

आज इस लेख में तेलुगु भाषियों का प्रथम और महत्वपूर्ण त्योहार 'उगादि' की विशेषताओं के बारे में प्रकाश डालें।

अन्य त्योहारों के समान इस नववर्ष का आरंभ भी घर की साफ-सफाई, आम के पत्तों से वंदनवार सजाना, रंगोलियों से घर और आंगन को भर कर, आगामी वर्ष का

स्वागत करना निश्चित है। स्मरण रहे कि इस पर्व पर अन्य त्योहारों के समान कोई चमक-धमक या चहल-पहल नहीं होती। घर के सदस्य प्रातःकाल ही अभ्यंगन स्नान कर नूतन वस्त्रों का धारण करते हैं। अपने इष्टदेव की पूजा-आराधना कर, मनपसंद मिष्टान्न और पकवानों को बनाकर भोजन कर संतुष्ट होते हैं। यथासंभव शांत चित्त से अपने मन पसंद कार्य करते हैं, क्योंकि माना जाता है कि, उगादि, अर्थात् नववर्ष का पहला दिन जैसे बीतता है, वर्ष पूरा वैसे ही बीतेगा।

उगादि पर तेलुगु परिवारों में प्रचलित रीति-रिवाजों पर ध्यान दें। प्रातःकाल में अभ्यंगन स्नान के पश्चात् खाली पेट पर भगवान को समर्पित प्रसाद के रूप में ''उगादि पच्चड़ी'' का सेवन करना चाहिए। इसमें प्राकृतिक छः स्वादों का सम्मिश्रण होता है -

(1) मीठे के लिए नया गुड़ - गन्ने के टुकड़े, (2) नमक, (3) खट्टा - नई इमली, (4) कसैला - आम का बनिया, (5) तीखा - हरी मिर्च, (6) कड़वा - नीम के फूल।

इन प्राकृतिक स्वादों को बनाये रखने के लिए, छोटे-छोटे टुकड़े कर, मिलाते हैं। पकाते नहीं। यह इसलिए है क्यों कि ऋतु परिवर्तन के आरंभ में इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शरीर को व्याधियों से लड़ने के लिए शक्ति देता है। इस मौसम में कई प्रकार की छूत की बीमारियाँ फैल जाती हैं। आयुर्वेद में कहा गया है कि आज से आरंभ होने वाली वसंत नवरात्रियों प्रति दिन सेवन करना अधिक लाभ दायी होता है।

उगादि के दिन प्रातःकाल ही सेवन किया जानेवाले प्रसाद को (जिसमें छः प्राकृतिक स्वादों का सम्मिश्रण होता है) ''निम्बकुसुम भक्षणम्'' कहा जाता है। इसमें मिलने वाले गुड़ से पेट संबंधित रोगों को, दर्द और वात का हरण होता है। इससे कमजोरी कम होती है। नए गुड़ का अधिक सेवन नहीं करना चाहिए। इसीलिए अन्य वस्तुओं के साथ मिलाकर खाने का नियम बनाया गया है। यहाँ तक आते-आते इमली के भी दोष खतम हो जाते है और इसके सेवन से शरीर के अंदर के उष्ण कम होता है। 'वात' के साथ-साथ 'पित्त' और 'श्लेष्म' का भी हरण होता है। पाचन क्रिया को संतुलित करता है।

कसैले कैरियों का सेवन गरमी के मौसम में लगने वाली 'लू' से बचाता है। नीम के फूल कड़वे होते हैं, फिर भी इनका अपना स्वाद होता है। औषधीय गुणों की गणना करें तो सर्व प्रथम जीभ को स्वाद का आभास देता है। श्लेष्म हरण क्रिमि दोषों का निवारण, पित्त हरण से लेकर कोढ़ की व्याधि को भी यह कड़वा स्वाद ठीक करने में सक्षम है।

मिर्च के तीखेपन से गले की सुजन और कान में दर्द आदि निवारण होता है। नमक का गुण है, धमनियों में चरबी को जमा नहीं होने देना।

इन औषधीय गुणों से युक्त व्यंजन का सेवन, एक तात्विक अर्थ का भी बोध कराता है कि जीवन सुख-दुःखों का सम्मेलन है, जिन्हें हमें समभाव से स्वीकारना होगा। षड् ऋतुओं का और मनुष्यों भावों के भी छः स्वाद प्रतीक है। इन सबको साथ लेकर जीवन जीने का सन्देश ''उगादी पच्चड़ी'' के सेवन में निहित है।

तेलुगु भाषियों के लिए उस दिन 'पंचांग श्रवण' का कार्यक्रम अपने आप में विलक्षण मान्यता है। प्रातःकाल में अपने इष्टदेवता की पूजा के समय, नववर्ष का पंचांग भी खरीदकर पूजा में रखते हैं। और शाम को इसे पढ़ा जाता है।

इस में तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण का समन्वय होने के कारण इसे पंचांग कहा गया है, जिसे महाविष्णु का स्वरूप मानते हैं। घर-परिवार में, मंदिरों में और वर्तमान में विभिन्न दृश्य पटल और मुद्रणों के माध्यम से आगामी वर्ष के शुभाशुभ फलों को बताते हैं। इस में हर

राशिवालों के वर्ष भर के राशिफल, आय और व्यय तथा सम्मान और अपमान की मात्रा तथा अन्य फलों की जानकारी दी जाती है। साथ में समूचे देश का राशिफल और शासक का भी राशिफल सुनाया जाता है।

समूचे देश का भविष्य, वर्ष भर में लगने वाले ग्रहण, होने वाली वर्षा, उगनेवाली फसल की मात्रा, कष्ट देने वाली प्राकृतिक विपदाएं, पशु और मनुष्यों की जनसंख्या में क्षय और वृद्धि के बारे में, शुभ मुहूर्त, शुक्र और गुरु ताराओं के अस्त का ब्योरा मिलता है।

आज के पंचांग श्रवण के फल भी अनेक हैं। तिथि के कारण संपत्ति, वासर के कारण आयु, नक्षत्र के कारण पापों का परिहार, योग से व्याधि का निवारण और करण से कार्य की अनुकूलता प्राप्त होती है। अतः किसी भी कार्य के आचरण में पंचांग की पवित्रता को ध्यान में रखकर करना उत्तम है। पंचांग श्रवण से गंगा स्नान का फल मिलता है।

जिस दिन उगादि त्योहार पड़ता है, उस दिन के अधिपति यह उस वर्ष के राजा होते हैं। इस वर्ष 30 मार्च, रविवार के दिन 'उगादि' पड़ रही है। अतः इस वर्ष के राजा 'रवि' अर्थात् सूर्य हैं। इसी के आधार पर इस वर्ष का मंत्री कौन सा ग्रह है, सेनाधिपति आदि की गणना कर, उनके पद के कारण होने वाली फल की प्राप्ति भी सूचित की जाती है।

आश्चर्य की बात यह है कि कितने सही ढंग से हर एक अंश की गणना करने की क्षमता अपने भारतीय ज्योतिष्यशास्त्र तथा अन्य ग्रन्थों में है। खगोल और भूगोल के समन्वय से जीवन को चलाने की विधि का निर्धारण करने से जीवनयान सुख और समृद्धि से भर पूर होती है।

भारतीय मान्यता के अनुसार प्रत्येक वर्ष का एक नाम होता है। जैसे प्रभवा, विभवा! और ऐसे साठ वर्षों की एक आवृत्ति होती है। तेलुगु भाषी इसका पालन विधिवत् करते हैं। अतः जिस नाम के वर्ष में जन्म हुआ है, उस नाम के वर्ष में दुबारा जन्म दिन मनाना-अत्यंत महत्व पूर्ण माना जाता है।

अतः ''षष्टिपूर्ति'' का उत्सव बड़ी श्रद्धा से और हो सके तो भव्य ढंग से मनाने की प्रथा तेलुगु भाषियों में प्रचलित है। इस वर्ष का 'श्री विश्वावसु' नाम है। उगादि से लेकर वसंत नवरात्रियों का शुभारंभ होता है।

भारतीय जीवन के आदर्श भगवान श्रीरामचन्द्रजी के जन्म दिन 'श्रीरामनवमी' तक स्थान-स्थान पर विभिन्न

प्रकार से उत्सव मनाये जाते हैं। देवी नवरत्रि का भी पालन किया जाता है।

पंचम स्वर में गानेवाले कोयल की कुहुक सुनने के लिए लोग वसंत ऋतु की प्रतीक्षा करते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी है कि, नववर्ष के आरंभिक उगादि पर्व के लिए और वसंत ऋतु के आगमन के लिए तेलुगु भाषी और तेलुगु भाषा के कवि कोकिल भी बड़े उत्साह से प्रतीक्षा करते हैं।

इसका कारण यह है कि विश्वंभर के तेलुगु भाषियों के कवि सम्मेलन स्थान-स्थान पर होते ही हैं। साथ में साहित्यिक स्पर्धा में और कवि साहित्यकारों को सम्मान और पुरस्कार दिए जाते हैं। ''उगादि पुरस्कार'' पाना अपने आप में अत्यंत गौरव की बात है।

नववर्ष का स्वागत आध्यात्मिक आस्था और आरोग्य परक अंशों को खगोल और भूगोल को जोड़ते हुए गंभीर रूप में मनाना अपने आप में विशेष है। प्रकृति के पांच तत्त्वों के सेवा भाव को, अपना भी जीवन लक्ष्य मानकर चलने की सीख षड् ऋतुओं के आरक्षिक दिन, षड् रुचियों के स्वाद का आस्वादन करने में इहलोक और परलोक का परमार्थ निहित है।

'श्री विश्वावसु' नामक यह तेलुगु नव वर्ष संपूर्ण जगत के लिए आनंददायक और मंगलदायक होने की शुभकामनाएँ करते हैं।

नववर्ष हो! नव आशायें जागृत हों!!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

निनैयार् पिरवियै नीक्कुम् पिरानै, इन्नीणिलत्ते
एनैयाळ वन्द विरामानुजनै, इरुंकविहळ्
पुनैयार् पुनैयुंम् पेरियवर् ताळ्हळिल् पून्तोडैयल्
वनैयार्, पिरप्पिल् वरुन्दुवर् मान्दर् मरुळ्शुरन्दे ॥९०॥

भवभयभेषजभूतम् मदुद्धरणार्थमवतीर्णं च भगवन्तं रामानुजं ये नाम न चिन्तयन्ति, ये च तद्विषयकाणि स्तोत्राणि न निर्मिमते, ये च स्तोतृसज्जनपादाब्जेषु कुसुमार्चनानि न कुर्वते तादृशा दुर्भर्गा मर्त्या अज्ञानान्धतमसावृता जननपदवीजंघाला एव वर्तेरन्॥

जो मानव, संसारदुःख मिटानेवाले परमोपकारक और मेरा उद्धार करने के लिए ही इस भूतल पर अवतीर्ण, श्री रामानुज स्वामीजी का ध्यान नहीं करते, उनकी स्तुति नहीं करते और ऐसी स्तुति करनेवाले सज्जनों की पुष्पमालाओं से अर्चना नहीं करते, ऐसे भाग्यहीन जन अत्यधिक अज्ञान से समावृत होकर, संसार में ही पडे रहकर दुःख भोगेंगे।

क्रमशः

तिरुमलेश के सन्निधि में 'उगादि' पर्व

देवादिदेव वह विष्णु भगवान श्रीवैकुंठ से पृथ्वी तक उतर कर आया। आते-आते उस वैकुंठ में स्थित पहाॅडियों, तालाबों और तीर्थों को ले आए। दोनों देवेरियों श्रीदेवी और भूदेवी के साथ भगवान गरुड, जो सेवक थे दल के साथ भूलोक आए।

दोखो! उस स्वामी ने यहाँ, इस दुनिया में, तेलुगु लोगों की जामीन पर घर बनाकर, तेलुगु लोगों के घरों में देव के रूप में आसीन हो गया। इसलिए वैकुंठ का वह महासंस्थान, जहाँ कलियुग वैकुंठ एवं दिव्य निवास के रूप में उभर रही है।

यहाँ एक बात है, जब से भगवान श्री वेंकटेश्वर वैकुंठ से आए, तब से 'गोपीनाथ दीक्षित' नाम के तेलुगु पुजारी ने प्राचीन वैखानस आगम शास्त्र के अनुसार अर्चना और त्योहारों का आयोजन किया। तब से उन वैखानस दीक्षित के वंशज परंपरा के अनुसार आज तक तिरुमल परंधाम केलिए पूजा का आयोजन कर रहे हैं।

तेलुगु परंपरा के अनुसार उत्सव और जुलूस उगादि त्योहार के दिन प्रारंभ होकर अगले उगादि के पहले दिन तक समाप्त होता है।

तिरुमल में उगादि उत्सव की पहली वर्षगाँठ को 'तिरुमलेश के सन्निधि में उगादि पर्व' कहा जाता है। इसे 'उगादि कोलुवु' और 'उगादि आस्थान' के नाम से भी जाना जाता है।

यह ''उगादि पर्व'' स्वर्ण दरवाजे के सामने तिरुमहामणिमंडप (घंटामंडप) में यह बहुत धूमधाम से आयोजन किया जाता है। ''आनंदनिलयवासी के उगादि आस्थान'' समारोह में केवल श्री बालाजी के अर्चकस्वामियों, जियंगार, एकांग, वैदिक विद्वान, देवस्थान के उच्च अधिकारीगण, न्यास-मंडली के सदस्य और तिरुमल मंदिर के कर्मचारी ही भाग ले सकते हैं और दर्शन कर सकते हैं। कोई अन्य भक्त दर्शन नहीं कर सकते। उतना ही नहीं, वीडियो कैमरे की आंख भी उन दृश्यों को फिल्माने का काम नहीं कर पाती। तथापि, 'तिरुमलेश के सन्निधि में उगादि पर्व' पढ़कर ध्यान करना ही काफी है। प्रत्येक भक्त को अपने मनोनेत्र से दर्शन कर सकते हैं।

एकांत में तिरुमंजन

उगादि के दिन, श्री बालाजी के मंदिर में सुप्रभात और तोमाल सेवा के बाद तिरुमंजन (अभिषेक) निजी तौर पर श्री मलयप्पस्वामी और दोनों देवेरियों के साथ श्री बालाजी के सेनाधिपति विश्वक्सेन को किया जाता है।

यदि उगादि 'शुक्रवार' को आता है, तो उस शुक्रवार के दिन ही श्री वेंकटेश्वर स्वामी की मूलमूर्ति को प्रप्रथम अभिषेक किया जाता है।

उगादि से पहले आनेवाले शुक्रवार को अभिषेक के बाद श्री वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति को विशेष हीरे जडित मुकुट, शंक-चक्र, वरद, कटिहस्त कवचों से सजाया जाता है। इस विशेष सजावट में आनंदनिलयवासी की मूर्ति की सुन्दरता अद्वितीय और अतुलनीय है। बहुत बढ़िया! आनंदमय! सर्वार्थ सिद्धिप्रद!

उसके बाद मंदिर में श्री वेंकटेश्वर स्वामी को तुलसी के साथ सहस्रनामार्चना और निवेदन किया जाता है।

सर्वभूपालवाहन में दोनों देवेरियों के साथ श्री मलयप्पस्वामी

सोने के दरवाजे के सामने घंटामंडप में श्री मलयप्पस्वामी की पूजा स्वर्ण सर्वभूपालवाहन में की जाती है, जिसमें श्रीदेवी भूदेवी पूरब की ओर गरुत्मंत की ओर मुख किए हुए है, जो स्वर्ण दरवाजा का सामना कर रहे हैं। उसके बाद

श्री बालाजी की उत्सवमूर्तियों, रेशम, पीतांबर, वज्रवैडूर्य, मरकत, माणिक्यादि अभूषणों वज्रमुकुटों और सुगंधित फूलों की मालाओं से विशेष तरीके से सजाया जाता है।

श्री वेंकटेश्वर के सेनापति

श्री वेंकटेश्वर के सर्वभूपालवाहन के बगल में दक्षिण की ओर एक अन्य आसन पर, सेना के भगवान श्री विश्वक्सेन प्रतिष्ठित है और दिव्य आभूषणों और मालाओं से सजाए गए है। श्री वेंकटेश्वर की सेना के सेनाधिपति विश्वक्सेन किरीट और तलवार पहने हुए बडे भय के साथ भगवान श्रीनिवास स्वामी की आज्ञाओं को पूरा करने के लिए तैयार है।

उसके बाद आनंदनिलय के श्रीनिवास स्वामी की मूलमूर्ति, स्वर्ण दरवाजे के सामने 'उगादि पर्व' के लिए तैयार हुए श्री बालाजी की उत्सवमूर्तियों एवं सेनाधिपति को निम्न लिखित रूप में विशेष रूप से आटाओं के व्यंजनों का निवेदन किया जाता है।

विशेष रूप से आटाओं के व्यंजनों का निवेदन

श्री बालाजी के अर्चकस्वामियों, बडे जियंगार, छोटे जियंगार, एकांग, आचार्य पुरुष, वैदिक विद्वान, देवस्थान के कार्यकारीगण, अन्य अधिकारीगण, देवस्थान न्यास-मंडली के अध्यक्ष, सदस्य, देवस्थान के पेशकार, आलय के कर्मचारीगण - जब कि कुछ लोग छत्रचामराओं को पकडे हुए है और मंगल वाद्ययंत्र बजा रहे है। वैदिक पाठों का सुन्दर पाठ किया जा रहा है। श्री बालाजी के रसोइए, पहले से तैयार किए गए विशेष व्यंजनों को रसोई से श्रीनिवास भगवान के निवेदन के लिए जुलूस के रूप में लाते हैं।

लड्डू, वडा, अप्पालु, दोसा, आटाओं से बनाये गये विविध व्यंजन, चीनी पोंगल, कालीमिर्च पोंगल, पुलिहोरा, दद्योदन आदि चावल के प्रसादों को विमान परिक्रमा में सोने के कुंए के बगल की रसोई से जुलूस के रूप में विमान परिक्रमा करते हुए रजत के दरवाजे के सामने बाहर रहे ध्वजस्तंभ की परिक्रमा करते हुए अन्दर आकर आलय प्रवेश करके, उधर गर्भालय में, इधर सोने की दरवाजे के आस्थान में निवेदन के लिए रखा जाता है। जबकि नैवेद्य की घंटियाँ हृदयांग रूप से बजाई जा रही हैं, जो सुनने योग है। दोनों स्थानों पर यह विशेष निवेदन हो रहे हैं।

रेशम वस्त्रों की भेंट

निवेदन पूरा होने के बाद, प्रदक्षिणा के पूरा होने के बाद, उत्तर-पूर्व कोने में श्री योगनरसिंह स्वामी मंदिर के बगल में ''सुगंधित स्थान'' के निकट श्रीश्रीश्री बडे जियंगार ने सुनहरे लेस बॉर्डर वाली छह बडे रेशम के कपडे सर पर रख लिया, जिन्हें चाँदि की थाली में मुडे हुए थे। जब कि छत्रचामर मंगलवाद्य को, पंचमुख दिव्य ज्योतियों को जलाया जाता है। न्यारा डोला, काँस्य थाली की घंटियाँ बजाते समय वैदिक मंत्रों का उच्चारण हृदयपूर्वक से कंठस्थ होकर किया जाता है। इन सबके साथ श्रीश्रीश्री छोटे जियंगार, एकांग, देवस्थान के कार्यकारी अधिकारी, संयुक्त कार्यकारी अधिकारी, मंदिर के उपकार्यकारी अधिकारी, पेशकार, पारुपत्यदार आदि मंदिर प्राधिकरण के साथ आए, मंदिर के रजत द्वार के सामने वेदी तक स्वर्ण ध्वजस्तंभ और बलिपीठ की परिक्रमा करके अन्दर आकर विमान की परिक्रमा करते हुए 'स्वर्ण दरवाजे' के पास आने पर बाजाभजंत्री लोग स्वर्ण दरवाजे के पास खड़े होकर बजाते हैं।

दिव्यज्योति के साथ 'सन्निधिगोल्ला' ने रेशम कपडे आदि के साथ रहे जियंगारों को श्रीनिवास के मंदिर में ले जाकर कुलशेखरपडी के पास खड़े करता है। केवल श्री जियंगार और एकांगी ही अर्चकस्वामियों को रेशम वस्त्र देते हैं। तुरन्त अर्चक स्वामियों कुलशेखरपडि (गर्भालय का आंगन) के पास पर्दा लगाएंगे।

अदंर पुजारी, जियंगारों द्वारा श्री वेंकटेश्वर स्वामी की मूलमूर्ति को भेंट किए गए छह रेशम वस्त्रों में से चार वस्त्रों को सजाते है। एक परिधान को श्रीनिवास मुकुट के लिए, दूसरे को नंदक तलवार के लिए, तीसरे को आदितोमाला के लिए और चौथे को उत्तरीय के रूप में सजाया जाता है। अर्चक स्वामी ने पर्दा को हटाकर कपूर के साथ सोने की थाली में ''वेंकटेश्वरस्वामी की दिव्य मंगलमूर्ति'' को पैरों से मस्तक तक दिव्य मंगल कपूर नीराजन देकर सभी को दिखाने पर कुलशेखरपडी से पर सभी लोगों ने भक्ति के साथ भगवान को देखे और आरती देखी। इस के बाद...

चंदन, तीर्थ, शठारि स्वीकार

सबसे पहले, पुजारियों अपने को चंदन, तीर्थ, शठारि स्वीकार करने के बाद, बडे जियंगार को, छोटे जियंगार को, एकांगि को, आचार्य पुरुषों को, ताल्लपाका वंशस्थ को तीर्थ, शठारि, चंदन और पान पुजारियों के द्वारा दिए जाते हैं। उसके बाद तीर्थ, चंदन और शठारि देवस्थान के कार्यकारी अधिकारी और अन्य अधिकारियों को उपरोक्त तरीके से पेश किया जाता है।

उगादि पर्व के संरंभ में श्रीनिवास को विशेष वस्त्र समर्पण

उसके बाद शेष दो रेशमी कपडों के साथ चाँदी की थाली को बडे जियंगार के सिर पर रखाया जाता है और स्वर्णदरवाजे के पास 'उगादि आस्थान' के लिए तैयार श्रीनिवास के उत्सवमूर्ति को अर्पित किया जाता है। पुजारी को वस्त्रों में से एक को श्री मलयप्पस्वामी के लिए और दूसरे को सेना के प्रमुख श्री विश्वक्सेन के लिए सजाते हैं।

श्रीनिवास को अक्षतारोपण

उसके बाद मुख्य पुजारी उनके सिर पर श्रीनिवास के पदवस्त्र से परिवट्टम (परिवेष्टन, सिर के चारों ओर लपेटा हुआ एक छोटा रेशमी कपडा) से बाँधते हैं और श्री मलयप्पस्वामी और विश्वक्सेन पर कुंकुमाक्षत (अक्षतारोपण) छिड़कते हैं। उसके बाद सेनाधिपति को परिवट्टम बाँधते हैं और श्रीनिवास स्वामी के पैरों पर गिरे हुए अक्षत लेते हैं और उन्हें विश्वक्सेन पर छिडककर शठारी अनुष्टान करते हैं।

पुजारियों को तंडुलदान - आनंदनिलयेश को आशीर्वाद

श्री वेंकटेश्वर स्वामी पुजारियों को पान-दक्षिणा के साथ तंडु (चावल) का उपहार देते हैं। दक्षिणा-पान के साथ चावल प्राप्त करने के बाद, अर्चक स्वामी साक्षात आनंदनिलय भगवान को ''नित्यैश्वर्योभव'' कह कर आशीर्वाद देते हैं। साक्षात श्रीनिवास से दान लेते हुए उस स्वामी से कहते है, ''स्वामी! श्रीनिवास! आप सदैव धन-संपत्तियों से समृद्ध रहे।'' ऐसा करके श्रीनिवास के पुजारियों को क्या भाग्य है। इस तरह आशीर्ववचन दिए हुए प्रधानार्चक को दूसरे अर्चक परिवट्टम बाँधकर औपचारिक अनुष्ठान करते हैं।

उगादि पर्व में पंचांग श्रवण

स्वर्णिम सर्वभूपालवाहन में श्रीदेवी और भूदेवी सहित आसीन हुए श्री मलयप्पस्वामी के चरणों में रहे नए वर्ष के पंचांग को अर्चक श्रीनिवास भगवान को नमस्कार करते हुए आस्थान सिद्धांति को देते हैं।

आस्थान सिद्धांति, भगवान को पंचांग श्रवण में उस दिन के तिथि, वार, नक्षत्रों का परिणाम, लाभ और हानि, नवग्रहों की चाल, फसल की वृद्धि, पशुधन की वृद्धि और 27 नक्षत्र जातक कुंडलियों के आय और व्यय, राज्य पूज्यता एवं अपमानों को सुनाते है। फिर से विशेष रूप से, स्वामी! अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक! आदिमध्यांतरहित! जगदेक सार्वभौम! श्रीमत्‌राजाधिराज परमेश्वर नित्य कल्याण सम्राट! श्रीमद्‌अलमेलुमंगपति, श्रीमद्‌आनंदनिलयवास! बहुपराक! बहुपराक! स्वामी आपने श्रीवैकुंठ को छोडकर इस कलियुग वैकुंठ में अवतरित नक्षत्र, परम शुभप्रद श्रवणा नक्षत्र है। आप इस नए साल में बहुत हृदयांतरंग होकर भक्तों के पापों को और बाधाओं को दूर करते हैं। समस्त इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। समस्त संपत्तियों की प्राप्ति के लिए आशीर्वाद देते हैं। शुभपरंपराओं को देते हैं। यही कारण है कि इस नए साल में लाखों भक्त आपके दिव्यमंगल की मूर्ति के दर्शन के लिए बहुत चाहते हुए निरंतर सतत रूप से तिरुमल को आते हैं।

आप के लिए उत्सव और जुलूस भी भव्यता के साथ आयोजित किया जायेंगे। भक्त बडी संख्या में उपहार चढ़ाते है। साथ ही आपकी आज्ञा के अनुसार चलनेवाले नवग्रह सदैव आपके भक्तों की संकटों से रक्षा करेंगे। पूरा देश हरा-भरा रहता है। समय-समय पर इधर-उधर अतिवृष्टि, अनावृष्टि रोग और भयों की अंश का होने पर भी आपके भक्त आप की कृपा से सर्वत्र सुखी रहेंगे। सुख से रहेंगे।

- ऐसा कहकर आस्थान सिद्धांति नए पंचांग श्रवण का अनुष्टान कर रहे थे, तब भगवान श्री वेंकटेश्वर सर्वभूपालवाहन में पंचांग को श्रद्धा पूर्वक सुन रहे थे, अपनी आँखों से श्रीदेवी और भूदेवी को देख रहे थे, एक छोटी-सी मुस्कान के साथ सिर हिला रहे थे और सभी भक्तों को कोमल आँखों और टकटकी से देखते हुए पूर्ण और उज्वल से अनुग्रह करते हैं।

उसके बाद आस्थान सिद्धांति क्रमशः श्रीदेवी भूदेवी को उत्तर फाल्गुनी और रेवती नक्षत्र के परिणाम बताते हैं, फिर वहाँ मौजूद श्री कार्यकारी अधिकारी, संयुक्त कार्यकारी अधिकारी, न्यास-मंडली के सदस्य एवं आलय अधिकारियों के नक्षत्र परिणामों को सुनाया जाता है।

इस प्रकार पंचांग श्रवण करवाये आस्थान सिद्धांति को श्रीनिवास के पुजारियों ने श्री स्वामी के चरणों पर रहे अक्षतों को लेकर सर पर छिडकते हुए शठारि से अनुग्रह करते हैं।

उसके बाद श्रीनिवास के बोक्कसम क्लर्क उठकर, बडे डर के साथ भगवान को प्रणाम कर, खडे होता है। पिछले दिन के हुण्डी का आय, आय-व्ययों को, उत्सव विशेषों को, देवस्थान के अन्य आलयों के उत्सवों को सुनाने के बाद, उन्होंने ऐसा कहा था कि - ''देव जी! आप मेरी बात सुनिए।'' बाद में उन्होंने साष्टांग नमस्कार करके शठारि से अनुग्रह प्राप्त कर लेता है।

तुरन्त ''कोलुवु पल्लेम'' नामक स्वर्ण थाली में नवनीत आरती देने के बाद, पुजारी कार्यकारी अधिकारी को आरती देने के बाद इसे सभी को दिखाएँगें।

उसके बाद ताल्लपाका, तरिगोंडा, महंत और मैसूर लोगों की आरती अलग से पेश की जाती है। उसके पश्चात वहाँ उपस्थित सभी भक्तों की ओर से एक-एक रुपया एकत्रित करते हैं और सभी की ओर से एक विशेष 'रुपया आरती' दी जाती है। इस प्रकार एकत्र किए गए रुपएँ कार्यपालक पदाधिकारी द्वारा राजकोष में जमा कराये जाएंगे।

अंत में बडे जियंगार जी को, उसके बाद देवस्थान के कार्यकारी अधिकारी जी को परिवट्टम बाँधकर शठारि से अनुग्रह करने के बाद श्रीनिवास के प्रसाद सेवन होता है, अक्षत पान, सत्कार को पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। इसके साथ ही 'तिरुमलेश के उगादि पर्व' का समारोह पूरा हो जाएगा।

यदि उगादि त्योहार पर पंचांग सुना जाए तो शत्रु का नाश होता है। बुरे सपने गायब हो जायेंगे। गंगा स्नान का फल और गोदान का फल प्राप्त होकर आयु बढती है। सुखी संतान का जन्म होगा।

उसमें तिरुमलेश विश्वकल्याण के लिए यह पंचांग श्रवण जैसा अच्छा कार्य कर रहे हैं।

श्रीनिवास मंदिर में उगादि की सुबह स्वर्ण द्वारों के सामने होनेवाले ''तिरुमलेश के उगादि पर्व'' को न देख पाने से दुखी न हो। श्रीनिवास को याद करें। सब के घर आनंदनिलय ही है। सबके आँगन, सोने के आँगन है। हर घर के अन्दर घण्टामण्डप ही है। सब के हृदय सर्वभूपालवाहन ही है। श्रीनिवास भगवान को अपने-अपने हृदयों में स्थापित करे। अपने घरों में और दिलों में नया पंचांग सुने। भगवान श्रीनिवास की कृपा से इस नए साल में सभी को शुभकामनाएँ!

ललिता

सकलबलंबुलु नीवे सर्वेश्वरा नाकु
अकलंकंबगु सुखमें अन्निटा निदे नाकु ॥ पल्लवि ॥

पोंदुग चक्रांकितमें भुजबल मिदे नाकु
अंदिना हरि नीचिंते आत्मवलमु नाकु
संदडि पेरुबलमु केशवनाममु नाकु
इंदुनु नंदुनु भवभय मिंक लेदिदे नाकु ॥ सकल ॥

अंगपु तिरुमणु लिवि पंचांगबलमु नाकु
संग नीपै पाटले स्वरबलि मीदे नाकु
रंगुग नी गुणरासुले राशिबलमु नाकु
इंगितमुग निहपरमुल केदुरे दिदे नाकु ॥ सकल ॥

कनुगोनु नी विग्रहमे ग्रहबलि मिदे नाकु
विनु नी-दासुल सेवे वेनुबलि मिदे नाकु
तनरिन श्री वेंकटपति दैवबलमु नाकु
धनमे चेप्पग निंतटा कलिगेबो इदे नाकु ॥ सकल ॥

- श्री ताल्लपाका अन्नमाचार्य

श्रीनिवासोविजयते! श्रीनिवासो विजयते!

तेलुगु मूल - श्री जे.बालसुब्रह्मण्यम

अनुवादक - श्रीमती सी.मंजुला

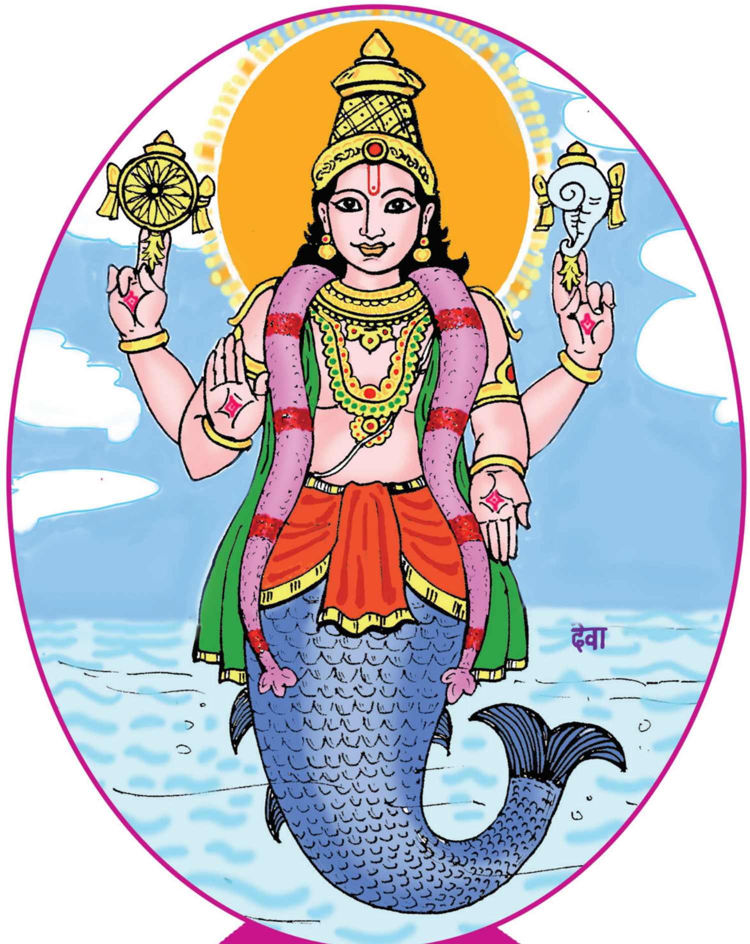

मत्स्य अवतार का वैभव

- डॉ.रमेश कृष्णा

भगवान विष्णु धर्म की स्थापना के लिए और दुष्टों का संहार करने के लिए कई रूपों में भूलोक पर अवतरित होते रहते हैं। इस प्रकार उनके 10 खास अवतारों का वर्णन करते रहते हैं। उनमें सबसे पहला अवतार 'मत्स्य अवतार' ही है। मत्स्य का अर्थ होता है मीन या मछली। भगवान श्रीहरि की लीलाएँ परम अद्भुत लीलाएँ हैं। उस महान प्रभु जी ने अपनी योग माया के द्वारा मत्स्य अवतार का धारण करके जो लीला दिखाई वह अत्यंत आश्चर्य जनक है।

वैसे तो मछली के रूप में पैदा होना बहुत ही नीच जन्म माना जाता है। यह पूरी तरह तमोगुण से भरा हुआ जीवन है और मछली हमेशा दूसरों पर आधारित होकर ही जीवन बिता सकता है। उसके लिए अपना कोई स्वतंत्र जीवन नहीं रह सकता। भगवान चाहे तो और कोई महान रूप धारण कर सकता था। लेकिन इस प्रकार मछली के रूप में पैदा होकर या अवतार धारण करके उन्होंने यह साबित किया कि सृष्टि में सभी जीव समान है। कुछ अपने आप को महान या स्वतंत्र मान सकते। लेकिन हर एक उसे परम प्रभु की करुणा पर ही आधारित है। ऐसी स्थिति में हम में क्यों यह अहंकार हो कि मैं बड़ा हूँ और यह मुझसे नीच है। मत्स्यावतार से यह संदेश भी मिलता है कि भगवान श्री महाविष्णु हर एक प्राणी में अंतर्यामी के रूप में रहकर अपनी लीलाएँ दिखाते रहते हैं। लेकिन प्राणियों की बुद्धि के अनुसार वे गुण वह नहीं पाता और उन गुणों के अनुसार न तो महानता पाते और न तो नीचता। क्योंकि भगवान प्राकृतिक गुणों से दूर रहते हैं। वे सभी गुणों से अतीत है। इस प्रकार मत्स्य अवतार भगवान के अनेकानेक अवतारों में विशेष महत्व रखने वाला अवतार है।

मत्स्य अवतार की कथा की दृष्टि से देखा जाने पर यह कहानी प्रस्तुत कल्प जिसे हम वैवस्वत मन्वंतर कहते हैं उससे पहले कल्प के आखिरी भाग में हुई। उस कल्प के अंत में ''ब्राह्म'' नामक महान प्रलय हुआ। तब सभी लोक उसमें डूब गए। उस समय ब्रह्माजी को सृष्टि करने का कोई काम नहीं रहा तो उन्हें नींद आ गई। उस समय उनके मुंह से वेद नीचे गिर गए। वेदों के बिना ब्रह्माजी सृष्टि नहीं कर सकते। उस समय हयग्रीव नामक एक असुर ने उन वेदों को अपने योग बल से चुरा लिया। ब्रह्माजी वेद न पाकर बड़े दुखित हुए। लेकिन सर्वशक्तिमान भगवान विष्णु ने दानवों के राजा हयग्रीव की इस चोरी को पहचान लिया। भगवान भविष्य द्रष्टा तो है ही। उन्होंने पहले ही यह जान लिया। तब वेदों का उद्धार करने के लिए उन्होंने मत्स्य का अवतार ले लिया।

उस जमाने में सत्यव्रत नामक एक महान राजा था जो सिर्फ पानी लेकर तप करता था। वही सत्यव्रत प्रस्तुत कल्प में वैवस्वत मनु के रूप में पैदा हुए जिनके नाम पर जो महाकाल चल रहा है उसी में आजकल हम सब जी रहे हैं। सत्यव्रत एक दिन कृतमाला नामक नदी में भगवान को जल तर्पण दे रहे थे। उस समय उनकी अंजलि में एक छोटी सी मछली आ गई। जब राजा ने उसे पानी के साथ नदी में छोड़ा तब उस मछली ने कहा प्रभु! इस नदी में कई बड़ी मछलियाँ रहती हैं। वे मुझे खा लेंगे। इसलिए आप मेरी रक्षा करो। तब राजा ने बड़ी दया के साथ उसे अपने कमंडल में ले लिया। लेकिन एक ही रात में वह मछली उस कमंडल के बराबर बड़ा बन गया। तब मछली ने कहा कि उसे ऐसे स्थान पर रखने की कृपा करें ताकि वह आराम से रह सकता है। तब राजा ने उसे एक घड़े में रखा तो तुरंत वह घड़े के बराबर का बढ़ गया। तब राजा ने उसे एक तालाब में रखा तो वह उस तालाब के बराबर का बढ़ गया। और कोई जगह न मिलने के कारण राजा ने उसे समुद्र में छोड़ा। तब मछली ने कहा हे राजा समुद्र में बड़े बलशाली मगरमच्छ रहते हैं। वे मुझे खा लेंगे। इसलिए मुझे समुद्र में मत छोड़ो। तब राजा ने उससे पूछा आप मामूली मछली नहीं है। एक दिन में ही आप 100 योजन लम्बे चौड़े सरोवर का आक्रमण कर लिया। इतनी शक्तिशाली जलचर के बारे में न कभी सुना न देखा। आप सचमुच सर्वशक्तिमान श्रीमन्नारायण ही हो सकते हैं। क्योंकि ऐसी लीलाएँ सिर्फ वे महाप्रभु ही कर सकते हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आप ने इस अवतार में मुझे दर्शन दे दिया।

तब भगवान ने उनसे कहा कि सत्यव्रत आज से सातवें दिन पर सभी लोक समुद्र में डूब जाएँगे। उसे समय मेरी प्रेरणा से तुम्हारे पास एक बहुत बड़ा नाव आएगा। तुम सभी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर ले कर और उनके साथ सप्तर्षियों से मिलकर उस नाव पर चढ़ो। उस समय सभी औषधियों को और अनाज को भी उसमें रखो। उस समय पूरा अंधकार ही रहेगा। कहीं प्रकाश नहीं दिखेगा। तब मत्स्य अवतार में वहाँ पर आऊँगा। तुम सर्पों के राजा वासुकी को मेरे सींग से रस्सी के रूप में बांध लो। तब मैं तुम्हें इस महाप्रलय से बचा लूंगा।

यह सुनकर सत्यव्रत भगवान विष्णु का स्मरण करते हुए बैठ गए तो महाविष्णु जी एक लाख योजन विस्तार सोने के रंग के शरीर से महामत्स्य के रूप में वहाँ आए। सभी मुनियों ने उनकी भूरी प्रशंसा की। **भगवान ने राजर्षि सत्यव्रत को अपने स्वरूप का संपूर्ण रहस्य उपदेश किया। ज्ञान, भक्ति और कर्म योगों से परिपूर्ण उनका दिव्य इतिहास ही ''मत्स्य पुराण'' के नाम के प्रसिद्ध हुआ। मत्स्य पुराण मानवों को ज्ञान और वैराग्य दिलाने वाला महान पुराण है।** सत्यव्रत महर्षियों के साथ उस नाव में बैठकर साक्षात भगवान से प्रबोधित सनातन ब्रह्म के स्वरूप का आत्म तत्त्व जान लिया। उसके बाद प्रलय काल समाप्त हुआ और नए कल्प में वही सत्यव्रत 'वैवस्वत मनु' के नाम से प्रसिद्ध होकर कल्प पुरुष बने। प्रलय काल समाप्त होते ही ब्रह्माजी नींद से उठे तब भगवान श्रीहरि ने हयग्रीव असुर से महान घोर युद्ध किया और उसका संहार करके वेद लाकर ब्रह्म को सौंप दिए जिनके बल पर ब्रह्माजी ने अपना सृष्टि कार्य फिर से प्रारंभ किया। इस प्रकार राक्षसों का संहार करके ब्रह्म तत्त्व का उपदेश करने वाले महामाया स्वरूप मत्स्य भगवान का हम स्मरण करते रहे।

प्रलय पयसि धातुः सुप्त शक्तेः मुखेभ्यः
श्रुतिगणमपनीतं प्रत्युपादत्त हत्वा।
दितिजमकथयद्यो ब्रह्मा सत्यव्रतानां
तमहमखिल हेतुं जिह्ममीनम नतोस्मि।।

\- श्रीमद्भागवत-अष्टम स्कंध

मत्स्य अवतार के महत्त्व के बारे में कई पुराणों में वर्णन मिलते रहने पर भी मत्स्य पुराण में जितना विस्तार

पूर्वक इस अवतार की महिमा और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसकी गहराई बताई गई है वह और कहीं नहीं मिलता। मत्स्य पुराण में जल प्रलय के साथ, मत्स्य और मनु के संवाद का वर्णन, 'राजधर्म' और 'राजनीति' का अत्यन्त श्रेष्ठ वर्णन, सावित्री सत्यवंत की कथा, नृसिंह अवतार की कथा, तीर्थयात्रा का वर्णन, दान माहात्म्य का वर्णन, प्रयाग तीर्थ और काशी माहात्म्य का वर्णन, पवित्र नर्मदा का माहात्म्य, स्थापत्य कला का सुन्दर वर्णन, मूर्तियों के निर्माण की पूरी प्रक्रिया एवं त्रिदेवों की महिमा आदि पर विशेष वर्णन कहा गया है। परम पवित्र मत्स्य पुराण में सभी शास्त्रों का शीर्षस्थ अद्भुत ज्ञान अथाह भंडार है। यह पुराण के श्रोता और वक्ता सभी पापों को दूर करके सभी प्रकार के कल्याण को भी प्रदान करता है। इस पुराण में राजा मनु और मत्स्य की कथा के साथ ही पृथ्वी के प्रलय की कथा भी है।

हालांकि कई लोगों को मत्स्य अवतार की कहानी के गहरे अर्थों को समझना मुश्किल हो सकता है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि मछली भगवान विष्णु का पहला अवतार है, जो विकासवादी तथ्य को दर्शाता है कि यह जलीय जीवन था जो सबसे पहले अस्तित्व में आया था।

यदि हमें उनसे कोई वास्तविक अर्थ निकालना है तो अधिकांश हिंदू पौराणिक कथाओं की तरह इस कहानी को एक दृष्टांत के रूप में माना जाना चाहिए। अब तक, विभिन्न व्याख्याएँ उपलब्ध हैं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध व्याख्या श्री अरबिंदो के कुंडलिनी जागरण की तुलना है। छोटी मछली कुंडलिनी के अवतरण का प्रतिनिधित्व करती है, जागृति का सर्प जो शुरू में छोटा होता है लेकिन जल्द ही जहाँ भी रहता है, वहाँ से बड़ा हो जाता है। मछली-जागृत ज्ञान - वही है जो आगे चलकर मानवता के भाग्य को बचाता है।

बाढ़ या प्रलय माया का प्रतीक है। यह वह दिखाता है कि भौतिकवादी दुनिया की इच्छा का भ्रम कैसे हमारी शांति के अस्तित्व को खतरे में डालती है। नाव हमारी चेतना का प्रतिनिधित्व करती है - कुछ ऐसा जिसे केवल जागृति (मछली) के माध्यम से बाढ़ की लहरों (माया-भौतिकवादी दुनिया का भ्रम) के कारण होने वाले विनाश से बचाया जा सकता है। सात महान ऋषि हमारे 7 चक्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो हमारे शरीर में ज्ञान के केंद्र हैं। सांसारिक इच्छाओं से सुरक्षा के लिए, हमें सत्य और शांति प्राप्त करने के लिए उनसे ऊपर उठने में मदद करने के लिए नाव को हिमवत पर्वत पर ले जाया जाता है। हिमवत पर्वत हमारे सिर का यानी ज्ञान के सर्वोच्च केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

एक बार जब आपकी कुंडलिनी जागृत हो जाती है, तो यह आपको आपकी सभी सांसारिक इच्छाओं और बंधनों से मुक्त कर देती है। संक्षेप में, भगवान मत्स्य की कहानी हमारे भीतर महान ज्ञान की जागृति के लिए एक दृष्टांत है। यह आत्मज्ञान की कहानी है।

जय बोलो मत्स्य भगवान की।

अप्रैल 2025

- **03-11 वायल्पाडु श्री पट्टाभिरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव**
- **06-14 ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव**
- **06 श्रीरामनवमी**
- **10-12 तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव, तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का प्लवोत्सव**
- **12 श्री तुंबुरुतीर्थ मुक्कोटी**
- **14 तमिल नूतन वर्ष, डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती**
- **30 श्री परशुराम जयंती, अक्षयतृतीया, श्री सिंहाचल क्षेत्र में चंदनोत्सव**

मिथ की महिला चरित

चंद्रमती

- डॉ.के.एम.भवानी

चंद्रमती अयोध्या के महाराज सत्यहरिश्चंद्र की पत्नी है। महादानी शिबि चक्रवर्ती की पुत्री है इसलिए वह शैब्या नाम से भी जाना जाती है। वह माता जगदंबा की अनन्य भक्तिन है। हमेशा माता की पूजा और अर्चना करनेवाली है। पति की सच्ची अनुगामिनी बनकर, पति सत्य मार्ग पर चलने में अपनी पूरी मदद देकर खुद अनेक मुश्किलों को झेली आदर्श पत्नी है। मानव जन्म को सार्थक बनाने में पति-पत्नी का संबंध कितना महत्व रखता है, इसका ज्वलंत उदाहरण चंद्रमती है। मार्कण्डेय पुराण और देवी भागवत के अनुसार चंद्रमती की कहानी इस प्रकार है।

अयोध्या के महाराज हरिश्चंद्र के सत्यव्रत की परीक्षा लेने की कोशिश में ऋषि विश्वामित्र उसका सारा राज्य दान में ले लेता है। दक्षिण के रूप में बाकी धन को वसूल करने के लिए एक महीने का समय देकर अपना शिष्य नक्षत्रक को हरिश्चंद्र के साथ भेज देता है। पत्नी रानी चंद्रमती और पुत्र लोहितास्य (जो रोहित नाम से भी जाना जाता है।) को साथ लेकर राजा हरिश्चंद्र जंगलों में से भटकते हुए काशी नगर पहुँचता है। पैसे चुकाने का समय समाप्त होने को आने पर भी राजा हरिश्चंद्र धन इकट्ठा नहीं कर पाता है। तब धर्म पालन और सत्य मार्ग पर चलने में पति की मदद करती हुई चंद्रमती राजा को सलाह देती है कि ''महाराजा! सत्पुरुषों को संतान की प्राप्ति के लिए पत्नी की अवश्यकता होती है। भगवती की कृपा से मुझे पुत्र संतान की प्राप्ति हुई है इसलिए अब आप मुझे किसी को बेचकर विश्वामित्र को दिया हुआ वचन निभाइए।'' यह सुनते ही हरिश्चंद्र दुखित हो जाता है, लेकिन उसके पास और कोई रास्ता नहीं रहने के कारण वह पत्नी को बेचने को तैयार होता है। काल कौशिक नामक ब्राह्मण चंद्रमती को दासी के रूप में खरीद लेता है। गाय के साथ बछड़े को भी ले चलने की तरह कौशिक ब्राह्मण चंद्रमती के साथ लोहितास्य को भी ले चलता है।

मालकिन (काल कौशिक की पत्नी) चंद्रमती को हमेशा दुख देती रहती है। बिना आराम दिए उससे घर का सारा काम करवाती रहती है। अकारण उसे गालियाँ देती रहती है। सदा उससे कटु बर्ताव करती रहती है, लेकिन पतिव्रता और धर्माचरण वाली चंद्रमती कुछ भी कहे बिना काम करती रहती है। वह कभी भी यह नहीं समझती है कि उसके सारे दुखों का कारण पति ही है। वह सत्यव्रत के लिए सब कुछ न्योछावर करने वाले ऐसे पति की पत्नी बनाना अपने जन्म-जन्मों की सौभाग्य मानती है मगर युवराज बनकर सुख भोग सकने वाला प्यारा पुत्र दासी पुत्र बनकर मालिक के घर में हमेशा काम करते रहना देखकर वह बहुत दुखित होती रहती है।

एक दिन मालकिन के भेजने पर लोहितास्य यज्ञ करने के लिए आवश्यक लकड़ियाँ लाने के लिए जंगल में जाता है तो वहाँ उसे साँप काट देता है तो वह मर जाता है। लोहितास्य के साथ जंगल गए बच्चे आकर चंद्रमती को बेटे की मौत के बारे में बताते हैं तो चंद्रमती रोती हुई मालकिन के पास जाकर बेटे को देखने के लिए जाने की अनुमति माँगती है। मालकिन निर्दयता से कहती है कि अभी जाने से मरनेवाला जिंदा तो नहीं आएगा, इसलिए घर का सारा कामकाज पूरा करके, तभी जाना है। चंद्रमती दुख को झेलती हुई घर का काम करने में रात हो

जाती है। तब मालकिन की अनुमति पाकर चंद्रमती अंधेरे में पुत्र को ढूँढती जंगल में जाती है। उसे एक साँप के बिल के पास लोहितास्य का मृत शरीर मिल जाता है। पुत्र शोक में डूबी उसे अपना कर्तव्य याद आता है कि सुबह होने के पहले ही उसे वापस मालिक की सेवा में हाजिर होना है इसलिए वह उसी रात के समय पुत्र की अंत्येष्टि करना चाहती है और लोहितास्य के शव को शमशान में ले जाती है।

जब वह बेटे की अंत्येष्टि की कोशिश में जुट जाती है तब वहीं पर दास बनकर रहने वाला उसका पति हरिश्चंद्र रात के गहरा अंधेरे में उसे पहचान नहीं पाता है और उससे शमशान में शव दहन करने के लिए दहन शुल्क मांगता है। अपने पास कुछ भी नहीं रहने की बात चंद्रमती बार-बार कहने पर भी हरिश्चंद्र नहीं मानता है। अपनी दयनीय स्थिति को बताकर पुत्र के शव दहन की अनुमति मांगती हुई चंद्रमती कितनी मिन्नतें करने पर भी कर्तव्यनिष्ठ हरिश्चंद्र अनुमति नहीं देता है। अंत में हरिश्चंद्र को चंद्रमती के गले में चमकते हुए सोने का मंगलसूत्र दिखता है तो वह उसे बेचकर शमशान शुल्क चुकाने को कहता है तब चंद्रमती को उसे भगवती ललिता माता का दिया हुआ वर याद आता है कि उसका मंगलसूत्र उसके पति के अलावा और किसीको नहीं दिखता है। इससे चंद्रमती पति को पहचानकर व्यथित मन से सारी बात बताती है। लेकिन कर्तव्य परायण हरिश्चंद्र पुत्र को जलाने के लिए भी शुल्क चुकाना धर्म मानकर पत्नी चंद्रमती को मंगलसूत्र को बेचकर पैसे लाने के लिए भेजता है।

मंगल सूत्र को बेचकर पैसे लाने केलिए चलनेवाली चंद्रमती को विधि वश उस देश के राज सैनिक पकड़ते हैं क्योंकि कठिन परीक्षा के अंतर्गत विश्वामित्र के द्वारा माया सृष्टि की गई माया चंद्रमती उस देश के राजकुमार को लेकर भागती है और उसे मार देती है। तो राज सैनिक निज चंद्रमती को देखते ही उसे ही हत्यारी समझकर, उसे पकड़कर राजा के सामने ले जाते हैं। क्रोध और दुखित राजा किसी न्याय निर्णय के बिना ही उसे अपने पुत्र की हत्यारी समझकर अपने सामने प्रस्तुत चंद्रमती को मौत की सजा देकर, बिना विलंब के उसी समय सजा को शमशान में अमल करने को कहता है। सैनिक चंद्रमती को सजा अमल कराने के लिए शमशान में लाते हैं। शमशान में लाई गई चंद्रमती सारी बात पति को बताती है। सत्य मार्ग पर चलने के लिए इतना सब कुछ किया पति को पत्नी का सर काटकर अपने कर्तव्य का पालन करने को प्रेरित करती हुई मरने को तैयार हो जाती है। जब हरिश्चंद्र उसे मारने के लिए तलवार उठाकर वार करता है। तब तलवार चंद्रमती के गले का हार बन जाता है। तभी विश्वामित्र वहाँ पहुँचकर हरिश्चंद्र को अपने और वशिष्ठ के बीच के संवाद को बताकर, अपना हार मानते हुए हरिश्चंद्र को उसका राज्य वापस कर देता है और उसका मरा पुत्र लोहितास्य को जिंदा करता है। तब सारे देवगण वहाँ प्रत्यक्ष होकर हरिश्चंद्र की जय गान करते हैं। स्वर्ग के राजा इंद्र देव सत्य का पालन करने में हमेशा मदद की सती चंद्रमती को पति के साथ स्वर्ण रथ पर बैठकर स्वर्ग में पहुँचने का वर देता हैं। तब चंद्रमती पति के साथ सशरीर स्वर्ग पहुँचती है। तब से भूलोक में राजा हरिश्चंद्र - 'सत्य हरिश्चंद्र' के नाम से प्रसिद्ध हो गया है।

इस प्रकार चंद्रमती पति के सत्यव्रत पालन में हर कदम पर अपना साथ देकर, अपने सतीत्व महिमा से साधारण मानव को दुर्लभ वर पाकर, सशरीर स्वर्ग पहुँचकर अपनी जिंदगी को धन्य की महिला रत्न है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

70) तिरुशालग्रामम् (सालग्राम) - मुक्तिनाथ

सालग्राम दिव्य क्षेत्र नेपाल में गण्डकी नदी किनारे है। यह एक स्वयं व्यक्त स्थल है। गोरखपुर (यू.पी.) से सनोली होकर पोकरा ओर जाना है। वहाँ से पैदल जाना है, हेलिकाप्टर भी उपलब्ध है।

मूलमूर्ति - श्रीमूर्ति मुक्ति नारायण, पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - श्रीदेवी - नाच्चियार।

तीर्थ - चक्र तीर्थ - गण्डकी नदी।

विमान - कनक विमान।

प्रत्यक्ष - ब्रह्म, रुद्र, गण्डकी इस दिव्य क्षेत्र के संबन्ध में यह माना जाता है कि नेपाल के राजधानी काठमांडू 262 कि.मी. मूक्तिनाथ यह (मुक्तिनाथ) क्षेत्र तीन कि.मी. पर है। कुछ लोगों का कथन सालग्राम मुक्तिनाथ क्षेत्र है। कुछ लोगों का कहना है कि काठमांडू से लगभग 104 कि.मी. पर गण्डकी नदी किनारे 'दामोधर का सालग्राम' है। सालग्राम में गण्डकी नदी में उपलब्ध होते हैं - जिनकी आराधना/पूजा हम अपने मंदिर और (निवास) गृहों में करते हैं। यहाँ से दिव्य ज्वालामुखी नामक दुर्गा मंदिर, अखंड दीप आदि हैं। यहाँ जनकपुरि (काठमांडू से 375 कि.मी. काठमांडू के पास बुधनील नारायण, (शयन नारायण)) धनुष्धाम। (जनकपुरी के पास) एवं वराह क्षेत्र (विराटनगर के पास) दर्शनीय स्थल हैं। काठमांडू में पशुपति नाम मंदिर एवं श्रीकृष्ण मंदिर भी हैं।

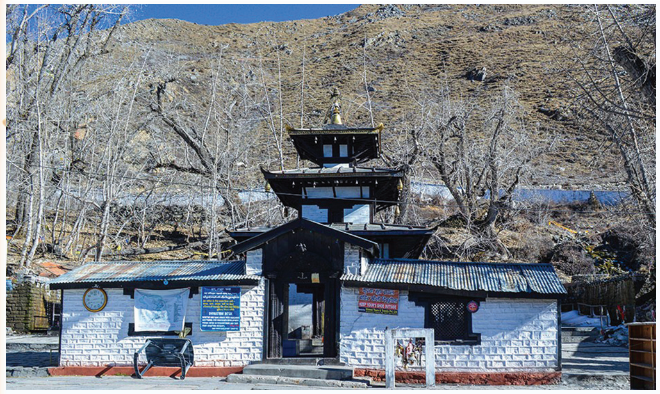

मंगलाशासन - दो आल्वार, कुल 12 दिव्य पद।

71) तिरु वडमदुरै - (मथुरा) (बृन्दावन, गोवर्धन सहित)

दिल्ली से आग्रा रेल मार्ग, बस मार्ग में, मथुरा जंगशन से लग भग तीन कि.मी. पर मंदिर आदि है। यहाँ से लगभग 10 कि.मी. पर बृन्दावन है।

मूलमूर्ति - गोवर्धनेश, बालकृष्णन्, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - सत्यभामा नाच्चियार।

तीर्थ - इन्द्र तीर्थ, गोवर्धन तीर्थ, यमुना नदी।

विमान - गोवर्धन विमान।

प्रत्यक्ष - इन्द्रादि देव गण, ब्रह्म, वसुदेव, देवकी मथुरा शहर में कृष्ण जन्म स्थान मंदिर है। आदि बन हैं यह मंदिर/सन्निधि उसी स्थान पर वना है जहाँ कृष्ण का अवतार प्राकट्य स्थल (कारागार) है।

मथुरा का इतिहास भगवान श्रीकृष्ण के प्राकट्य काल से भी पुराना है। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान राम के छोटे भाई शत्रुघ्नजी लवण असुर का वध करके मथुरा, नामक पुरी की स्थापना की।

विद्वानों के कथनानुसार आज का कटरा केशवदेव ही कंस का कारागार है। ऐतिहासिक सत्य है कि यहाँ का मंदिर चार बार बनाया, और मुसलमानों के द्वारा ध्वंस किया गया। जन्म स्थान का पुनःस्थापन पंडित मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयत्न एवं उनकी अंतिम अभिलाषा के अनुसार 1951 में कृष्ण जन्म भूमि सेवा संस्थान (ट्रस्ट) की स्थापना हुई केशव मंदिर एवं कंस कारागार के जिस स्थान पर श्रीकृष्ण का जन्म हुआ वह स्थान (जो ईदगाह के पीछे अवाचित है) खुदाई में निकले लगभग 1500 वर्ष प्राचीन मंदिर

के गर्भगृह तथा सिंहासन को ज्यों का त्यों सुरक्षित कर दिया गया है। इसके ऊपर एक भव्य मंडप बनाकर-नीचे सिंहासन के ही के ऊर्ध्व भाग पर, संगमरमर का एक कलापूर्ण मंडप बनवा दिया गया है। दोनों तरफ दर्शनार्थियों के आने जाने का सोपान बना है। यहाँ अखंड नामसंकीर्तन का प्रबन्ध है।

बृन्दावन में दक्षिणाभ्य शैली में निर्मित रंग मंदिर है जहाँ दक्षिण के आगम नियमानुसार - आराधना होती है दक्षिण के अर्चक परिचारक ही यहाँ कैंकर्य करते हैं। इस मंदिर में रंगमन्नार, आण्डाल एवं गरुडाल्वार दर्शन देते हैं। वेंकटाचलपति, चक्रत्ताल्वान (सुदर्शन भगवान) की सन्निधि एवं आल्वार, आचार्यों की सन्निधि है।

कहा जाता है की आजकल आल्वार द्वारा मंगलाशासित मंदिर मूर्ति नहीं है। बाद का निर्मित द्वारकानाथ जी एवं मथुरानाथ जी के मंदिर हैं।

मंगलाशासन - 5 आल्वार, 50 दिव्य पद।

कृष्ण जन्म स्थान, मथुरा से गोवर्धनगिरि लगभग 10 कि.मी. पर है। यहाँ कई भक्त गिरि परिक्रमा करते हैं - लगभग 15 कि.मी. कृष्ण से संबन्धित कोई मंदिर नहीं दीखता।

72) तिरुवाय्प्पाडि - (गोकुलम) गोकुल

तिरुवाय्प्पाडि दिव्य क्षेत्र - श्रीकृष्ण जन्म स्थान, मथुरा में (यमुना पर) लगभग 5 कि.मी. पर है। आटो आदि वाहन में जा सकते हैं।

मूलमूर्ति - मन मोहन कृष्णन। पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन।

तायार (माताजी) - रुक्मिणी, सत्यभामा देवी।

तीर्थ - यमुना नदी।

विमान - हेम कूट विमान।

विशेष - आल्वार द्वारा मंगलाशासित मंदिर/मूर्ति आजकल दीखता नहीं है। गोकुल में लगभग एक कि.मी. पर पुराना यमुना नदी किनार गोकुल नाम का मंदिर स्थापित है।

यहाँ के मंदिर नन्दगोप, यशोदा, बलराम विग्रह के नीचे - बालकृष्ण एवं लकडी के छोटे पालने में दर्शन देते हैं। सब लकडी की मूर्तियाँ हैं।

मंगलाशासन - 3 आल्वार, कुल 22 दिव्य पद।

क्रमशः

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(54वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

श्री यतिराज अष्टोत्तर शतनाम

यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने सभी वेद विरोधी मतों को परास्त करके समस्त लोकों में श्रेष्ठजनों के द्वारा समस्त श्रीवैष्णव सिद्धान्त की स्थापना कर भगवान श्रीमन्नारायण के द्वारा विरचित समस्त लोकों के उद्धार का मार्ग तैयार किया। असंख्य लोगों ने आपकी कृपा से श्रीवैष्णव दीक्षा ग्रहण की और विशुद्ध शंख-चक्र आदि चिह्नों से युक्त होकर उभय वेदान्त के तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त कर एवं भगवान की माया को जीतकर इस कलिकाल में मुक्ति प्राप्त की। महामनीषी श्री यतिराज ने अपनी सामर्थ्य से सभी मनुष्यों को श्रीविष्णु भगवान के चरण कमलों का अनुयायी बनाते हुये श्री गोविन्द तथा श्री कूरेश आदि शिष्यों के साथ श्रीरंगनाथ भगवान के दिव्यधाम में निवास किया। ऐसे महामहिमशाली यतिराज के श्रीरंगम् तथा और समस्त प्रान्तों में असंख्यों शिष्य थे। यतिराज श्री रामानुजाचार्य के प्रधान शिष्यों में 74 पीठाधीश थे, जो कि विशिष्ट विद्वान् थे। इनके अतिरिक्त असंख्य प्रपन्न श्रीवैष्णव महात्मा थे, जो कि अहर्निश आपके नित्य कैंकर्य में संलग्न रहा करते थे। सुव्यवस्था की दृष्टि से मठ का समस्त कैंकर्य उपरोक्त महात्माओं ने पृथक्-पृथक् रूप में स्वीकार कर लिया था, जिसमें आचार्य वरद विष्णु, आचार्य कूरेश एवं अन्य भट्टवर्ग श्रीभाष्य के व्याख्यान कार्य में सहयोगी बनकर भी यतिराज के कृपापात्र थे। मठ के आराध्य श्री वरदराज भगवान की अर्चा श्री देवराज मुनि करते थे। पाकशाला का कार्य गुरुभक्त प्रणतार्तिहराचार्य अपने अनुज सहित सम्पन्न करते थे और आचार्य देहोपचार-अभ्यंग आदि कार्यों में श्री आन्ध्रपूर्णाचार्यजी संलग्न थे। गोमठवंशावतंश श्री बालाचार्यजी श्री यतिराज की चरण पादुका और कमण्डलु को लेकर सदैव साथ चला करते और धनुर्धरदास श्री यतिराज को चलने में हस्तावलम्बन देकर सदैव सेवा में तत्पर रहते थे। अमंगी नामक आचार्य दुग्ध गरम कर रात्रि में आपको समर्पित करते और उत्कलाचार्य नामक शिष्य भोजन किये हुये पात्रों का मार्जन कार्य करते थे। उत्कल वरदाचार्य व्यंजन शकादि लाने के कार्य में नियुक्त थे। कलिंग देश का श्रेष्ठ शिष्य पर वादियों को परास्त करने को सदैव तैयार रहता था। चण्ड और शुण्ड नामक महाबली दो पहलवान शिष्य राजकीय कार्य एवं मठ के अन्दर कोई भी कमी होती तो उसको धनोपार्जन करके पूर्ण कर अपने को कृतार्थ मानते थे।

इस प्रकार यतिराज श्री रामानुजाचार्य के विभिन्न कैंकर्य को सम्पन्न करने वाले उनके हजारों शिष्य थे। जो केवल निस्वार्थ भाव से आचार्य निष्ठा को ही सर्वस्व मानते थे। उपरोक्त शिष्य समुदाय में महात्मा आन्ध्रपूर्णाचार्य की आचार्यनिष्ठा आदर्श एवं महान थी। वे तो "मेरे लिये उपायो-पेय श्री आचार्यदेव के चरणारविन्द ही हैं।" ऐसा निश्चित कर भक्तिभाव से परिपूर्ण अष्टोत्तरशत (108) दिव्य नामों के द्वारा इष्ट देवता के समान श्री यतिराज रामानुजाचार्य के चरण-कमलों की प्रार्थना किया करते थे। वह श्री रामानुज अष्टोत्तरशतनामावली निम्नलिखित है:-

यतिराज श्री रामानुजाचार्य के 108 नाम -

1. श्री रामानुज
2. श्री पुष्कराक्ष
3. श्री यतीन्द्र
4. श्री करुणाकर
5. श्री कान्तिमत्यात्मज
6. श्री श्रीमान्
7. श्री लीला मानुष विग्रह
8. श्री सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञ
9. श्री सर्वज्ञ
10. श्री सज्जनप्रिय
11. श्री नारायण कृपापात्र
12. श्री भूतपुरीनायक
13. श्री अनघ
14. श्री भक्तमन्दार
15. श्री केशवानन्दवर्द्धन
16. श्री कांचिपूर्णप्रियसख
17. श्री प्रणतार्तिविनाशक
18. श्री पुण्य संकीर्तन
19. श्री पुण्य
20. श्री ब्रह्मराक्षसमोचक
21. श्री यादवाप्रितापार्थवृक्षच्छेदकुठारक
22. श्री अमोध
23. श्री लक्ष्मणमुनि
24. श्री शारदाशोकनाशन
25. श्री निरन्तर जनाज्ञाननिर्मोचनविचक्षण
26. श्री वेदान्तद्वयसारज्ञ
27. श्री वरदाम्बुप्रदायक
28. श्री पराभिप्राय तत्वज्ञ
29. श्री यामुनांगुलिमोचक
30. श्री देवराज कृपालब्ध षड्वाक्यार्थ महोदधि
31. श्री पूर्णार्यलब्धसन्मन्त्र
32. श्री शौरिपादाब्ज षट्पद
33. श्री त्रिदण्डधारी
34. श्री ब्रह्मज्ञ
35. श्री ब्रह्मज्ञानपरायण
36. श्री रंगेशकैंकर्यरत
37. श्री विभूतिद्वयनायक
38. श्री गोष्ठीपूर्ण कृपालब्ध मन्त्ररत्न प्रकाशक
39. श्री वररंगानुकम्पात्त द्रविड़ाम्नायपारग
40. श्री मालाधरार्य सुज्ञात द्राविड़ाम्नाय तत्वधी
41. श्री चतुः सप्तति शिष्याढ्य
42. श्री पंचाचार्यपदाश्रय
43. श्री प्रपीत विषतीर्थाम्भ
44. श्री प्रकटीकृतवैभव
45. श्री प्रणतार्तिहराचार्यदत्तभिक्षैकभेजनः
46. श्री पवित्रीकृतकूरेश
47. श्री भागिनेयत्रिदण्डक
48. श्री कूरेश दासरथ्यादिचरमार्थप्रदर्शक
49. श्री रंगेशवेंकटेशादिप्रकटीकृतवैभव
50. श्री देवराजार्चनरत
51. श्री मूक मुक्ति प्रदायक
52. श्री यज्ञमूर्ति प्रतिष्ठाता
53. श्री मन्नाथ
54. श्री धरणीवर
55. श्री वरदाचार्यसद्भक्त
56. श्री यज्ञेशार्ति विनाशक
57. श्री अनन्ताभीष्ट फलद
58. श्री विट्ठलेश प्रपूजित
59. श्री श्रीशैपूर्णकरुणालब्धरामायणार्थ
60. श्री प्रपत्ति धर्मैकरत

61. श्री गोविन्दार्य प्रियानुज
62. श्री व्यास सूत्रार्थ तत्वज्ञ
63. श्री बोधायनमतानुग
64. श्री श्रीभाग्यादि महाग्रन्थ कर्त्ता
65. श्री कलिनाशन
66. श्री अद्वैतमत विच्छेता
67. श्री विशिष्टाद्वैतपारग
68. श्री कुरंगनगरी पूर्णमन्त्ररत्नोपदेशक
69. श्री विनाशिता खिलमत
70. श्री शेषीकृतरमापति
71. श्री पुत्रीकृतशठाराति
72. श्री शठजिद् ऋणमोचक
73. श्री भाषादत्त हयग्रीव
74. श्री भाष्यकार
75. श्री पवित्रीकृत भूभाग
76. श्री कूर्मनाथ प्रकाशक
77. श्री श्रीवेंकटाचलाधीश शंखचक्रप्रदायक
78. श्री वेंकटेशश्वशुर
79. श्री श्रीरमासख
80. श्री कृपामात्रप्रसन्नार्य
81. श्री गोपिका मोक्षदायक
82. श्री समीचीनार्थ सच्छिष्य
83. श्री सत्कृत
84. श्री श्रीवैष्णव प्रिय
85. श्री कृमीकण्ठ नृपध्वंसी
86. श्री सर्वमन्त्र महोदधि
87. श्री अंगीकृतान्ध्रपूर्णार्य
88. श्री शालग्राम प्रतिष्ठित
89. श्री श्रीभक्तग्राम पूर्णार्य
90. श्री विष्णुवर्द्धन रक्षक
91. श्री बौद्धध्वान्तसहस्रांशु
92. श्री शेषरूप प्रदर्शक
93. श्री नगरीकृत वेदाद्रि
94. श्री दिल्लीश्वर समर्चित
95. श्री नारायण प्रतिष्ठाता
96. श्री सम्पत्पुत्रविमोचक
97. श्री सम्पत्कुमार जनक
98. श्री साधुलोकशिखामणि
99. श्री सुप्रतिष्ठित गोविन्द राज
100. श्री पूर्णमनोरथ
101. श्री गोदाग्रज
102. श्री दिग्विजेता
103. श्री गोदाभीष्ठ प्रपूरक
104. श्री सर्वसंशयविच्छेता
105. श्री विष्णुलोक प्रदायक
106. श्री अव्याहत महद्वर्त्मा
107. श्री यतिराज
108. श्री जगद्गुरु

श्रीवैष्णव प्रपन्नों के लिये प्राण स्वरूप उपरोक्त रामानुज अष्टोत्तरशतनामावली की रचना श्री आन्ध्रपूर्णाचार्य स्वामी के द्वारा सभी मनुष्यों के उद्धार के लिये की गई है। जो मनुष्य इन 108 नामों को श्रद्धा के साथ पढ़ते और सुनते हैं उनके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं और वे अन्त में मोक्ष धाम में जाते है।

।। श्री प्रपन्नामृत का 54वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान में
महिला शक्ति का वैभव

- श्रीमती ए.आर.सुधा

"नारी समाजस्य कुशलवास्तुकारा।" अर्थात् स्त्री समाज की कुशल वास्तुकार है। सनातन धर्म सर्वश्रेष्ठ धर्म है। भारत धरा का एक मात्र पवित्र स्थान है जहाँ पर सनातन धर्म का पालन किया जाता है। यही एक मात्र धर्म है जिसमें स्त्री को उचित महत्व और उसका सम्मान जीवन के प्रति स्तर पर दिया जाता है। आधुनिक काल के चर्चित विषयों में एक मुख्य विषय नारी सम्मान एवं उसकी उन्नति है। हम भारत डेस्क की तुलना माता से करते है (भारत माता)। इस भूमि पर जन्मी प्रति नारी के अनेक रूप-बेटी, पत्नी, माता, मार्गदर्शी और सर्वश्रेष्ठ देवी है। नारी का महत्व सभी सनातनी को ज्ञात है। नारी की श्रेष्ठता एवं मुख्यता के बारे में हमारे पुराणों में प्रमाण है।

"कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नारशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्।।"

यह श्लोक श्री वेंकटेश्वर सुप्रभात से लिया गया है। ये दो पंक्ति स्वयं भगवान श्रीराम के लिए है। भगवान राम में सभी सद्गुण है परंतु उन्हें सर्वप्रथम अपनी माँ के पुत्र के रूप में पहचाना जाता है। इस श्लोक के द्वारा सनातन धर्म में मातृत्व को प्रमुखता दी गई है।

इसी प्रकार श्री वेंकटेश्वर प्रपत्ति (भगवान के प्रति समर्पण), जिसमें सोलह श्लोक है। सर्वप्रथम श्लोक में श्री लक्ष्मी के प्रति प्रार्थनापूर्ण आराधना है, जो सर्वोच्च जो अपने शास्वत वात्सल्य के कारण कृपा बरसाती है। जिस प्रकार एक बच्चा अपने पिता की मदद की चाहत में सबसे पहले अपनी माँ से सिफ़ारिश के लिए संपर्क करता है, उसी प्रकार, भक्त भगवान के संपर्क से पहले माता का अनुग्रह प्राप्त करने में इच्छुक रहता है।

ऐतिहासिक संबंधों में भी महिला प्रथम की प्रवर्ती पाई जाती है। अभिलेखों के अनुसार यह पाया गया है की तिरुमल से संबंधित प्रथम ऐतिहासिक संदर्भ पल्लवरानी सामवायी का है जिन्होंने भोग श्रीनिवास की चाँदी की मूर्ति बनवायी और समर्पित किया। स्त्री बहुकार्यण होती है। वह एक समय पर बहुत सारे कार्य करने की क्षमता रखती है। वह कर्मचारी समय सीमा का पालन कर सकती है और उसको दिए गए कार्य को बड़े उत्साह के साथ पूरा कर सकती है। सनातन धर्म का पालन करने वाले महिलाओं को प्रमुखता देते है। इसका प्रमाण स्वयं भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी है जिन्होंने अपनी पत्नियों श्री महालक्ष्मी और श्री पद्मावती का स्थान अपने हृदय में दिया है। इसको स्वयं भगवान का संकेत शब्द

मानकर टी.टी.डी. ने स्वीकार किया है। जिसका परिणाम ये है टी.टी.डी. के कई कार्यालयों के कई गतिविधियों में महिलाओं को प्राधानिकता दिया गया है। तिरुमल में स्वच्छता बनाया रखना एक अत्यंत कठिन कार्य है। पवित्र पहाड़ी पुण्यक्षेत्र की स्वच्छता की प्रशंसा दुनिया के हर कोने के श्रद्धालु करते है, जिसका श्रेय बड़ी संख्या में महिलाओं को जाता है। आस-पास के कॉटेज, गेस्ट हाउस और अन्य स्थानों की सफाई करने वाली अधिकतर महिला कर्मचारी ही है। टी.टी.डी. ने महिलाओं को रोज़गार दिया है, जहाँ अगरबत्ती, टाइलेट, साबुन, स्पर्श साफ़ करने वाला उत्पाद, सूखे फूलों से चित्र बनाये जाते है।

शिक्षा :

शिक्षा एक ऐसा औज़ार है जो स्त्री की आत्मविश्वास को बढ़ाता है। महिलाओं का सशक्तिकरण केवल शिक्षा प्रदान करने के माध्यम से ही संभव है। इसको दृष्टि में रखते हुए कई दशक पहले ही टी.टी.डी. द्वारा महिलाओं के लिए विशेष शिक्षा संस्थान बनाए गए है। इसका मुख्य उद्धेश्य रायलसीमा के अशिक्षित छात्राओं को शैक्षिक मंत्र प्रधान करना एवं उनकी स्थाई को बढ़ावा देना, जिसके कारण वह पड़ोसी क्षेत्रों की महिलाओं के साथ समान स्तर बनाए रख सकें।

टी.टी.डी. ने तिरुपति में श्री पद्मावती महिला डिग्री और पी.जी.कॉलेज, श्री पद्मावती जूनियर कॉलेज और श्री पद्मावती महिला पॉलिटेक्निक की स्थापना की, जिसने छात्राओं को आगे बड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

जो माता-पिता अपनी बेटियों को पड़ने के लिए बड़ी शहरों में भेजने में सोचते थे, वह पास के तिरुपति में भेजने के लिए नहीं किचकिचाए। इस प्रकार तिरुपति में कई विश्वद्यालयों की स्थापना हुई। इन संस्थानों से शिक्षा प्राप्त महिलाओं ने दुनिया में अपना एक अलग स्थान बनाया है।

अधिकारियों से लेकर उच्च अधिकारियों तक महिलाओं ने स्वयं को श्रेष्ठ साबित किया है। महिला एक मार्गदर्शी है, जिसे यहाँ के कार्यकारी अधिकारियों में देखा जा सकता है। टी.टी.डी. निर्देशों को प्रियान्वित करने एवं भक्तों को दर्शन तक पहुँचाने में इनका बड़ा सहयोग है।

कल्याणकट्टा :

बाल सुंदरता का प्रतीक होता है। इससे मनुष्य का अहंकार बड़ता है। जब बाल को भक्तजन भगवान को समर्पित करते है, तब उनका अहंकार भस्म हो जाता है। भक्तों के द्वारा बाल को समर्पित करने के स्थान को कल्याणकट्टा कहते है। पुरुष नाइयों के द्वारा कई भक्तों का मुंडन किया जाता है परंतु यहाँ पर महिला भक्तों की सेवा के लिए महिला नाई भी हैं। टी.टी.डी. द्वारा नियोजित 1340 नाईयों में से लगभग 20 प्रतिशत महिलाएँ हैं।

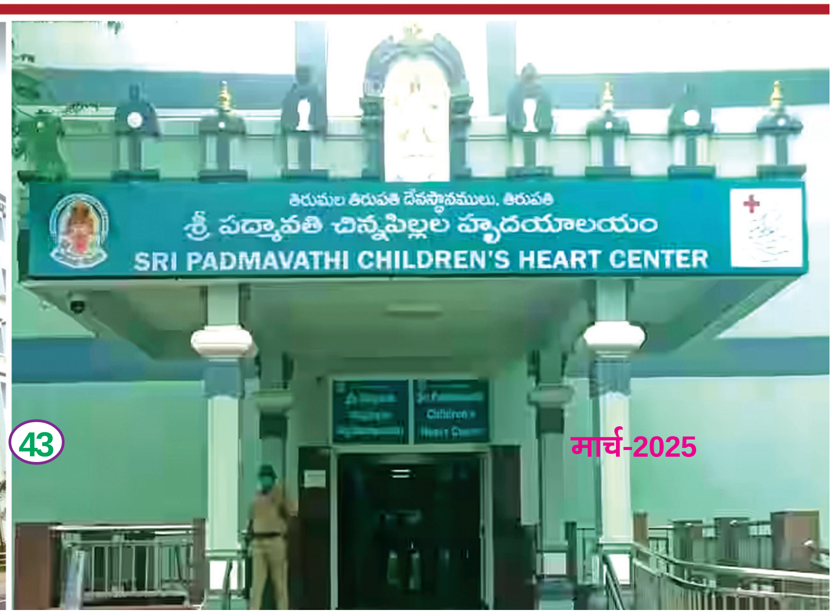

सुरक्षा :

टी.टी.डी. की सुरक्षा विभाग लंबे समय तक पुरुषों के अधिकारी क्षेत्र में रही, इसका मुख्य कारण इस पद के लिए शारीरिक बल एवं साहस की आवश्यकता थी। हालांकि महिलाएँ इस क्षेत्र में भी पहुँच चुकी है। न केवल भगवान की संपत्ति की रक्षा कर रही है, बल्कि तिरुमल के भक्तों को भी सुरक्षण प्रदान कर रही हैं।

आरोग्य :

स्विम्स विश्वविद्यालय जो एक मल्टीस्पेशालिटी अस्पताल टी.टी.डी. द्वारा संचालित है, उसमें छात्राओं के लिए मेडिकल कॉलेज शुरू किया गया है, जिसका नाम माता श्री पद्मावती के नाम पर रखा गया है। देश के गिने-चुनें महिला पेशेवर संस्थानों में से एक है, जिसमें केवल महिलाएँ पढ़ती हैं। कई लड़कियों के बचपन से डॉक्टर बनने और समाज की सेवा करने के सपने को यह संस्था साकार कर रही है। टी.टी.डी. श्री पद्मावती चिल्ड्रन्स हार्ट सेंटर, जो पद्मावती हृदयालय के नाम से भी प्रसिद्ध है। जिस प्रकार एक माता की धड़कन अपने अनारोग्य शिशु के लिए धड़कता है, उन शिशुओं के लिए उचित एवं निःशुल्क वैद्य यहाँ पर दिया जाता है। इस अस्पताल ने पूरे भारत और विदेशों से आए 3500 से भी अधिक बच्चों को जीवनदान दिया है। इसने आंध्रप्रदेश के लिए आरोग्यश्री योजना और दूसरे राज्यों के मरीजों के लिए आयुष्मान भारत योजना के तहत इलाज़ पाने वाले देश के दस सबसे उचित स्वास्थ केंद्रों में से एक के रूप में ख्याति प्राप्त किया है। ''श्री वेंकटेश्वर अपना हृदयालय'' ने एक योजना तैयार किया है जिसके अंतर्गत दान कर्ताओं को एक लाख रुपये दान करने होते है।

सेवा :

तिरुमल में सेवा प्रधान करने के लिए आवेदन करने वाले (श्रीवारि सेवकों-स्वयंसेवक) में से एक बड़ा हिस्सा महिलाएँ हैं। महिलाएँ आमतौर पर वी.क्यू.सी. क्यू-लाइन, विशाल रसोईघर के लिए सब्ज़ियाँ काटने, भोजन परोस में, इत्यादि कार्यों में शामिल होती हैं।

ऐसा प्रतीत होता है की ऐसी कोई भूमिका नहीं है जिसे निभाने में महिलाएँ अक्षम हो। टी.टी.डी. ने महिलाओं को ऐसी भूमिकाएँ निभाने और मानवता की सेवा करने के लिए हर संभव अवसर प्रदान किया है।

(गतांक से)

(आयुर्वेद)

अमरूद

- डॉ.सुमा जोषि

स्वास्थ्य के लिए अमरूद की पत्तियों का उपयोग :

एंटीऑक्सिडेंट, फ्लेवोनोइड्स, टैनिन और अन्य बायोएक्टिव यौगिकों की समृद्ध सामग्री के कारण अमरूद की पत्तियों के कई स्वास्थ्य लाभ हैं। उनके रोगाणुरोधी, सूजनरोधी, एंटीऑक्सीडेंट और मधुमेहरोधी गुणों के कारण पारम्परिक चिकित्सा में इनका व्यापकरूप से उपयोग किया जाता है।

1) इसकी पत्ती की चाय अपने रोगाणुरोधी और कसैले गुणों के कारण दस्त, पेचिश और खाद्य विषाक्तता के इलाज में मदद करती है। यह पाचन में सुधार करता है, सूजन और एसिडिटी जैसी गैस्ट्रिक समस्याओं को कम करता है।

2) मधुमेह प्रबन्धन : अमरूद की पत्तियाँ आन्तों में ग्लूकोज अवशोषण को कम करके रक्त शर्करा के स्तर को कम करने में मदद करती हैं। अमरूद की पत्तियों की चाय पीने से इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार हो सकता है।

3) वजन प्रबन्धन : इसकी चाय जटिल कार्बोहाइड्रेट को शर्करा में बदलने से रोक कर वजन घटाने में सहायता करती है। यह चयापचय और वसा के टूटने को बढ़ावा देता है।

4) कोलेस्ट्राल को कम करने में मदद करता है।

5) अमरूद की पत्तियों को चबाने या अमरूद की पत्तियों के काढ़े का माउथवॉश के रूप में उपयोग करने से मौखिक अल्सर, दान्त दर्द और मसूडों की सूजन का इलाज करने में मदद मिलती है। यह अपने जीवाणुरोधी गुणों के कारण सांसों की दुर्गन्धि को खत्म करता है।

6) अमरूद की पत्ती का पेस्ट या काढ़ा अपने जीवाणुरोधी और सूजन-रोधी प्रभावों के कारण मुँह से फुंसी और त्वचा संक्रमण के इलाज के लिए प्रभावी है। एंटीऑक्सिडेंट झुर्रियों को कम करने और त्वचा की बनावट में सुधार करने में मदद करते हैं।

7) अमरूद को पत्तियों के जीवाणुरोधी और कसैले गुण घाव, कट और कीडे के काटने को जल्दी ठीक करने में मदद करते हैं।

8) अमरूद की पत्ती की चाय कफ निस्सारक के रूप में कार्य करके और बलगम निर्माण को कम करके खांसी, ब्रोंकाइटिस और जमाव से राहत देने के लिए फायदेमंद है।

9) अमरूद की पत्तियाँ बोलों के झडने और रूसी का इलाज करने में मदद करती हैं। अमरूद की पत्तियों को उबालकर ठण्डा किया हुआ पानी सिर पर लगाने से बालों की जडें मजबूत हो सकती हैं और सिर के संक्रमण कम हो सकता है।

10) अमरूद की पत्तियाँ लिपिड स्तर को कम करके और रक्त वाहिकाओं पर ऑक्सीडेटिव तनाव को

रोककर रक्तचाप को कम करने और हृदय स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद करती हैं।

11) एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन-सी से भरपूर अमरूद की पत्तियाँ प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने और संक्रमण से लडने में मदद करती है।

स्वास्थ्य के लिए अमरूद फल का उपयोग :

1) अमरूद एक पोषक तत्वों से भरपूर फल है जो कई स्वास्थ्य लाभों से भरपूर है।

2) रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। अमरूद में विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में होता है, जो संतरे से चार गुना अधिक होता है। यह प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद करता है, शरीर को संक्रमण और बीमारियों से बचाता है।

3) अमरूद आहार फाइबर का एक बडा स्रोत है, जो स्वस्थ पाचन को बढ़ावा देता है, कब्ज को रोकता है और आन्त्र नियमितता का समर्थन करता है।

4) इसमें कम ग्लाइसेमिक डण्डेक्स और उच्च फाइबर सामग्री रक्त शर्करा के स्तर को नियन्त्रित करने में मदद करती है, जिससे यह मधुमेह रोगियों के लिए उपयुक्त है।

5) अमरूद विटामिन-ए से भरपूर होता है, जो अच्छी दृष्टि के लिए आवश्यक है और मोतियाबिंद और मैक्यूलर डिजनरेशन जैसी आंखों की समस्याओं को रोकने में मदद करता है।

6) अमरूद में मौजूद लाइकोपीन और अन्य एंटीऑक्सीडेंट मुक्त कणों को बेअसर करने में मदद कर सकते हैं, जिससे कुछ कैंसर, विशेषरूप से प्रोस्टेट और स्तन कैंसर का खतरा कम हो जाता है।

7) इसमें सूजनरोधी गुण होते हैं और यह गठिया और अन्य सूजन सम्बन्धी बीमारियों से राहत दिलाने में मदद करता है।

8) अमरूद में विटामिन-बी (जैसे बी-6 और नियासिन) होते हैं जो संज्ञानात्मक क्षमताओं और रक्त परिसंचरण सहित मस्तिष्क के कार्य में सुधार करते हैं।

9) अमरूद में मौजूद मैग्नीशियम मांसपेशियों और तंत्रिकाओं को आराम देने में मदद करता है, जिससे तनाव से राहत मिलती है।

10)अमरूद को अपने दैनिक आहार में शामिल करने से समग्र स्वास्थ्य में काफी सुधार हो सकता है। इसे कच्चा, जूस में या स्मूदी और सलाद में उपयोग किया जा सकता है।

अमरूद के अधिक सेवन से होनेवाले दुष्प्रभाव :

1) अधिक सेवन से दस्त या कब्ज हो सकता है।

2) बहुत अधिक सेवन से निम्न रक्त शर्करा स्तर (हाइपोग्लाइसीमिया) हो सकता है, खासकर मधुमेह की दवाएँ लेनेवाले लोगों में।

3) बार-बार अमरूद के बीज चबाने या अधिक मात्रा में कच्चा अमरूद खाने से दान्तों में दर्द या इनेमल का क्षरण हो सकता है, खासकर संवेदनशील दान्तोंवाले लोगों में।

4) कुछ व्यक्तियों को अमरूद से एलर्जी का अनुभव हो सकता है।

5) अमरूद कुछ दवाओं में हस्तक्षेप कर सकता है, खासकर मधुमेह या उच्च रक्तचाप के लिए। अत्यधिक सेवन से इन दवाओं का प्रभाव बढ़ सकता है।

अमरूद का प्रयोग सही से करें। कुछ संशय आये तो नजदीकी तत् संबंधित वैद्य से सम्पर्क करें। यहा जानकारी मात्र के लिए दी गयी है। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

समाप्त

मार्च महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

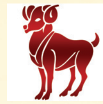

मेष राशि - नौकरी क्षेत्रों में पदोन्नति, व्यापारादि कार्यों का विस्तार, आर्थिक समुन्नति। विवादित विषयों का समाधान, गृहस्थ जीवन सुखमय, सुखद यात्रा योग, तीर्थाटन योग। पठन-पाठनादि कार्यों में अभिरुचि। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में सहयोग, कार्यों में गतिरोध, अपनों का असहयोग। मांगलिक कार्यों में धन व्यय।

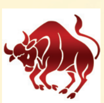

वृषभ राशि - उत्तम स्वास्थ्य होने से मन प्रसन्न रहेगा। छात्रों को कठिन परिश्रम करने से प्रतियोगि क्षेत्रों में सफलता। संतान पक्ष की चिन्ता रहेगी जिसके कारण मानसिक तनाव, धर्मादि कार्यों में रुचि, नौकरी में उल्लास, दाम्पत्य सुख, व्यापारिक क्षेत्रों में सफलता। अपनों का - मित्रों का सहयोग होने से कार्य में सफलता।

मिथुन राशि - अपने दिनचर्या को व्यवस्थित बना कर रखे, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। अनेकानेक मार्गों के द्वारा धन प्राप्ति योग, राजकीय कार्य में प्रगति, कुटुम्बिय सहयोग, शैक्षणिक उत्कर्ष एवं सफलता। मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि। अनेकानेक सफलता प्राप्त होंगे।

कर्कटक राशि - आरोग्य सुख प्राप्त होंगे। धर्मादि कार्यों में रुचि एवं संलग्नता बनी रहेगी। मन प्रसन्न रहेगा। श्रमानुकूल फल प्राप्ति होंगे। रुके कार्यों में विकास होगा। सुखद यात्रा योग बन रहा है। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा, उद्योग-व्यापारादि में सफलता। भूमि क्रय-विक्रयादि कार्यों से धन लाभ, नूतन गृह निर्माणादि कार्य होंगे।

सिंह राशि - यह माह आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। अपने वाणी व्यवहार पर नियन्त्रण रखे वरना वाद-विवाद हो सकता है, कार्य सहयोगियों से तनाव, वैमनसता। संतान सुख प्राप्त होंगे, निर्माण कार्यों में प्रगति, उद्योग-व्यापारादि कार्यों में शिथिलता। आय से अधिक व्यय होगा।

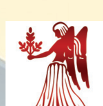

कन्या राशि - नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी, आरोग्य सुख प्राप्त होंगे, कार्यक्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण होगा। विशिष्टजनों के सम्पर्क होने से लाभ होंगे, आप अपने दिनचर्या को नियमित बनाकर रखे जिससे शारीरिक-मानसिक कष्ट न हो। पारिवारिक सुख, कौटुम्बिक सहयोग, इष्टमित्रों का साथ।

तुला राशि - आर्थिक सफलता, स्वास्थ्य उत्तम, व्यापार में सफलता। पारिवारिक सुख, आरोग्य सुख, चित्रकला-कवितादि रचनात्मक कार्यों में रुचि। रोजी-रोजगार में पूर्ण सफलता, साधुजनों का समागम, श्रेष्ठजनों का सहयोग एवं आशीर्वाद। छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता, अभीष्ट कार्यों की सिद्धि।

वृश्चिक राशि - शारीरिक कष्ट जैसे उदर विकार-नेत्र वेदना होगी जिससे मन खिन्न रहेगा। पारिवारिक कष्ट, कौटुम्बिक उत्तरदायित्व में बाधा, आर्थिक कष्ट, आय कम-खर्च अधिक। सामाजिक कार्यों में संलग्नता, मांगलिक कार्यों में धन व्यय। शैक्षणिक विकास, छात्रों के लिए बुद्धि एवं बौद्धिक विकास।

धनुष राशि - आर्थिक पक्ष मजबूत होंगे। चतुर्मुखी सफलता, यश-मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि। आरोग्य सुख, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में रुचि एवं सफलता। अपनों का सहयोग, कौटुम्बिक सुख, सामाजिक विकास, यत्र-तत्र यात्रा से लाभ। पारिवारिक सुख, संतान सुख, छात्रों के लिए समय अनुकूल।

मकर राशि - इस मास के आखिर में आप शनि की साढ़ेसाति से मुक्त हो जायेंगे। अनेकानेक मार्गों के द्वारा धन प्राप्त होंगे, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि, पदोन्नति। नौकरी क्षेत्रों में उल्लास, व्यवसायिक वृद्धि, स्वजनों से अनुकूलता, कौटुम्बिक सुख, इष्टमित्रों का सहयोग। संतान सुख, दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा।

कुंभ राशि - विद्या बुद्धि का विकास, अभीष्ट कार्य सिद्ध होंगे। अपने स्वभाव से अधिकारियों के साथ मिलकर कार्य निष्पादन कर सकते हैं। रोजी-रोजगार में अनुकूलता, कठिन परिश्रम का पूर्ण फल मिलेगा। मन प्रसन्न रहेगा, अपनों का सहयोग बना रहेगा।

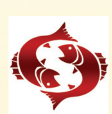

मीन राशि - अपने दिनचर्या को ध्यान में रखते हुए कार्य करें वरना शारीरिक कष्ट हो सकता है। किसी भी कार्यों को सोच-समझकर, सावधानी पूर्वक करे वरना पछताना पर सकता है। श्रमानुकूल सफलता नहिं मिलेगी, आय से अधिक व्यय होगा। सामयिक कार्यों में विकास, पारिवारिक कलह, वाद-विवाद में ग्रस्तता होगी।

(नीतिकथा)

मछुआरे की सीख

- श्री के.रामनाथन

एक दिन सबेरे भारी मन से भरा एक युवक समुद्र के किनारे पर बैठा हुआ था। उस ओर कुछ मछुआरे मछली पकड़ने अपनी जाल के साथ निकल रहे थे। तब एक मछुआरे की नजर उस युवक पर पड़ी। उसने सोचा कि यह स्थान तो बड़ा खतरनाक है, और यहाँ आत्म हत्या करने वाले ही आयेंगे। लेकिन यह युवक यहाँ क्यों आ बैठा है? उसने उस युवक के निकट जाकर सवाल किया, ''हे युवक! यह स्थान तो बड़ा खतरनाक है और यहाँ तुम क्यों आकर बैठे हो? क्या तुम्हें अपने जीवन में कोई समस्या है?''

उसे उत्तर देते हुए युवक ने कहा, ''जी, मैं अपने जीवन में हार गया हूँ, मुझे अपने धंधे में बड़ा घाटा हो गया है और मेरे परिवार वाले मुझे आदर नहीं करते। इसलिए मैंने निर्णय कर लिया है कि अपने प्राण छोड़ दें।'' यह सुनकर मछुआरे ने कहा, ''अरे पागल, क्या तुमने कभी मछली पकड़ने के हमारे काम देखा है? चलो मेरे साथ समुद्र के बीच में जाकर मछली पकड़कर लायेंगे।'' अब युवक को मछुआरे की बात मधुर लगी और वह भी उसके साथ निकल गया।

अन्य कुछ मछुआरों के साथ वह युवक भी एक नाव पर सवार हुआ। वह नाव समुद्र के बीच में आ पहुँची और मछुआरे अपनी जाल बिछाकर मछली पकड़ने लगे। उस युवक के मन में भी समुद्र के बीच में आने के बाद एक विशेष प्रकार का अनुभव पैदा हुआ और यहाँ तक कि वह अपनी सारी समस्याओं को भूल गया। भाग्यवश उनको उस दीन अनेक मछलियाँ मिलीं। वे सब बहुत खुश थे। थोड़े समय के बाद वे नाव को समुद्र के किनारे की ओर चलाने लगे। परंतु दुर्भाग्यवश उस समय तेजी से हवा बहने लगी और नाव भी असीमित रूप में हिल-डुलने लगी। यहाँ तक कि तूफान आने की स्थिति हो रही थी। फिर भी वे मछुआरे निर्भीक अपनी नाव किनारे की ओर चला रहे थे। नाव के तेज हिल-डुलने पर युवक के मन में अब भय पैदा हो गया कि क्या हम जीवित बचेंगे? मजे की बात यह है कि उस दिन सबेरे उस युवक के मन में आत्म हत्या करने की प्रेरणा थी। अब तो उसमें बच निकलने का विचार पैदा हो गया।

प्राकृतिक संकटों को पार करके आखिर वह नाव समुद्र के किनारे पर आ पहुँची। नाव से सब मछुआरे उतर गये और उन सब के साथ युवक भी उतर गया। उस समय उसके मन में एक बड़ा सवाल उदित हुआ। उसने अपना सवाल उस दिन सबेरे मित्र बने उस मछुआरे से पूछना चाहा।

वह मछुआरा युवक के मुख को देखकर समझ लिया कि उसके में कुछ पूछने की इच्छा है। इसलिए उसने युवक को देखकर कहा, "अरे मित्र, तुम्हारा संदेह क्या है? हिचके बिना पूछो।" तब उस युवक ने पूछा, "मित्र, आपलोग इतने संकटों को पार करके मछली पकड़ लाते हैं। हर रोज आपको कोई न कोई समस्या अपनी यात्रा में होती है। इतनी मुसीबतों के होते हुए भी आपलोग जरा भी भयभीत नहीं होते, यह कैसे? मछुआरा उसके प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, "तुमने देखा होगा कि समुद्र की लहरें हमेशा चढ़ती और उतरती हैं, समुद्र में कभी-कभी झंझावात बहता है और तेज आँधी आती है।

इतनी समस्याओं के होते हुए भी हम लोग जरा भी विचलित नहीं होते। क्योंकि चढ़-उतरती लहरों को या तो तेज बहते झंझावात को या तो आँधी को हम कभी संयम में नहीं ला सकते। उनको संयम में लाने की शक्ति हम में नहीं है। फिर भी जिस नाव पर हम यात्रा करते हैं उसे संयम में लाने की ताकत हम में हैं। इसलिए हम नाव को अपनी काबू में रखकर सुरक्षित रहते हैं।

यदि यह नाव डूबकर हम समुद्र के जल में गिर जायें तो भी वहाँ तैरते हुए अपनी सांस को काबू में रखने की ताकत भी हम में है। इसलिए संयम में नहीं लाये जा सकने वाली लहरे, आँधी, झंझावात आदि की ओर कभी हम ध्यान नहीं देते। हम सदा अपने संयम में रख सकने वाली नाव, हमारे हाथ और हमारी सांस आदि पर ही सदा ध्यान रखते हैं। इससे हम प्रचंड़ आंधी या झंझावात या कठोर लहरें आदि देखकर कभी नहीं डरते। उसके बदले आगे क्या करना है इस पर ही हम सोचने लगते हैं।

मछुआरे की बात से वह युवक अब स्पष्ट समझ गया कि जिसे हम संयम में नहीं ला सकते उसकी ओर विचार न कर जिसे संयम में ला सकते हैं उस पर सोचना ही भला है। हमारे जीवन में उठती समस्यायें हमारे संयम से बाहर हो सकती हैं। उस पर विचार करके विचलित होंगे तो हम अपने आत्मविश्वास खो देंगे और हमारी उन्नति भी नहीं होगी। इसलिए उस पर से चिंता न करके हमारी ताकत क्या है और कैसे आगे बढ़ना है आदि पर विचार करके कार्य करें तो हम जीवन में सफल होंगे। इस स्पष्टता से अब युवक के मन में विश्वास पैदा हो गया कि हम भी अपने बल के सहारे आगे बढ़ सकते हैं।

जनवरी-2025 महीने का क्विज-30 के समाधान

1) मकर-संक्रांति, 2) कनुमा, 3) माधव,

4) शैलेन्द्रपुर, 5) मुक्कोटि एकादशी,

6) श्री वेंकटेश्वर स्वामी / बालाजी,

7) अंजनादेवी, 8) पुंजिकस्थला

9) केसरी, 10) वज्र आयुध,

11) दधीचि, 12) श्रीहरि विमान,

13) मंगलतीर्थ, गंगानदी,

14) मतंग महर्षि, 15) श्री स्वामिपुष्करिणी.

चित्रकथा

श्री वेंकटेश्वर का प्रिय भक्त अन्नमय्या

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

बहुत समय तक रास्ता दिखाई नहीं दिया। बहुत थक गया। आँखे घूम रहे हैं। अन्नमय्या ने जोर से बालाजी की प्रार्थना की। 15
माँ पद्मावती और बालाजी भगवान से रास्ता दिखाने केलिए प्रार्थना की। 16
पद्मावती माँ अन्नमय्या के सामने प्रत्यक्ष होने से... 17
जननी मुझे रास्ता दिखाओ माँ!
तुम्ही मेरी माँ! करुणामृत वल्ली। 18
बडी सुहागिन की भाँति आकर अन्नमय्या के सामने आकर अलिमेलु मंगम्मा खडी हो गयी। 19
बेटा! चप्पलों से पहाड चढना गलत है न! यह पहाड पवित्र सालग्राम है। 20
देवी माँ अदृश्य हो गयी। सामने रास्ता, भक्त बृंद, भगवान जी का आनंदनिलय दिखाई दिया। 21
अन्नमय्या के मुँह से संकीर्तन निकला...
अदिवो... अल्लदिवो... (गाना) 22
जल्दी जल्दी पहाड चढ गया। पुष्करिणी में स्नान किया। मंदिर के भीतर गया। बालाजी का दर्शन करके.... 23
कोंडललो नेलकोन्ना.... (गाना) 24
अन्नमय्या का मन पुलकित हुआ और आनंद से भर गया। उनके आँखों में खुशी के आँसू भर गया। 25
ओम नमो वेंकटेशाया! 26
ऐसा बोध होता है कि माँ को बुलाते ही प्रकट हो जाती है। 27
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-32

1) समुद्र मंथन से आविर्भाव देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..
2) ब्रह्म और रुद्र किस रूप में भगवान श्रीनिवास के पास पहुँचा?
ज)..
3) किस ने चोल राजा को शापग्रस्त किया?
ज)..
4) रंगों से बनाने वाले त्योहार का नाम क्या है?
ज)..
5) हिरण्यकशिपु का बहन का नाम क्या है?
ज)..
6) प्रह्लाद के पिता का नाम क्या है?
ज)..
7) उगादि के दिन किस विषय का श्रवण करना अनिवार्य है?
ज)..
8) चंद्रमती का पति का नाम क्या है?
ज)..
9) लोहितास्य के माता-पिता कौन है?
ज)..
10) सत्यव्रत ने किस नदी में जल तर्पण दिया था?
ज)..
11) तिरुशालग्रामम् मुक्तिनाथ मंदिर का विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
12) श्री अलर्मेलु मंगा के पति का नाम क्या है?
ज)..
13) नंदक खड्ग अंश से जन्मित व्यक्ति का नाम क्या है?
ज)..
14) अन्नमय्या को पैदल मार्ग में मार्गनिर्देशन किस ने किया?
ज)..
15) तिरुमल में विराजित भगवान का नाम क्या है?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

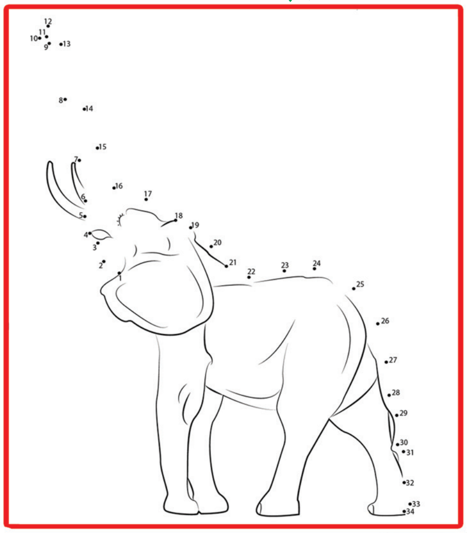

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) सूर्यपूजा	अ) श्री वेंकटेश्वर स्वामी
2) श्री स्वामिपुष्करिणी	आ) श्री वेदनारायण स्वामी
3) तिरुचानूर	इ) श्री महाविष्णु
4) अन्नमय्या	ई) तिरुमल
5) गरुडा	उ) श्री पद्मावती देवी

1) आ 2) ई 3) उ 4) अ 5) इ

श्रीकृष्ण स्तोत्र

वंदे नवघनश्यामम्
पीतकौशेयवासम्।
सानन्दं सुंदरं शुद्धं
श्रीकष्णं प्रकृतेःपरम्॥

चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

जवाब : a)5, b)4, c)1, d)3, e)2.

(1)

(2)
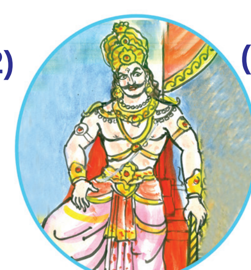
(3)

(4)
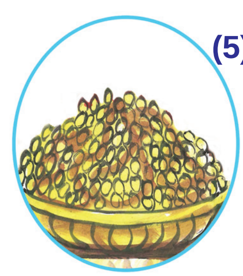
(5)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
ई.एम.ओ. (EMO) :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 19-01-2025 को ति.ति.दे. की ओर से उत्तर प्रदेश, अयोध्या श्रीरामलल्ला भगवान जी को पवित्र रेशमी वस्त्र समर्पित करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी।

दि. 15-01-2025 को ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन प्रांगण के मैदान में अत्यंत वैभव से श्री गोदादेवी का कल्याण महोत्सव को संपन्न किया।

दि. 19-01-2025 को तिरुपति में स्थित 'स्विम्स' आस्पताल और 'विष्णुनिवासम्' यात्री आवास समुदाय केंद्र को निरीक्षण करते हुए ति.ति.दे. के ई.ओ. और ति.ति.दे. के जे.ई.ओ.

दि. 27-01-2025 को तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी मंदिर के परिसर प्रांत को निरीक्षण करते हुए ति.ति.दे. के ई.ओ., ति.ति.दे. के जे.ई.ओ.। इस कार्यक्रम में अन्य अधिकारीगण भी भाग लिया।

दि. 26-01-2025 को ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन प्रांगण के मैदान में 76वाँ भारत गणतंत्र दिवस कार्यक्रम को अत्यंत वैभव से संपन्न किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के ई.ओ. ने पुलिसों से गौरव वंदन को स्वीकारते हुए दृश्य।

दि. 02-02-2025 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के पदेन-सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण लेते हुए आं.प्र. धर्मस्व शाखा के आयुक्त श्री के.रामचंद्र मोहन जी।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-02-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under
RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.

श्री लक्ष्मी जयंती

दि.14-03-2025